मेरीखेती

मार्च 2026 I मूल्य: ₹49

www.merikheti.com

विषय सूची

सम्पादकीय

सलाहकार मंडल

खेत खलिहान	05 - 13
बागवानी फसलें	13 - 20
मशीनरी	20 - 36
कृषि सलाह	36 - 39
पशुपालन–पशुचारा	40 - 47
औषधीय खेती	48 - 51

विज्ञापन के लिए संपर्क करें :
91-9899991906, 91-8800777501

संपादकीय

गेहूं की फसल में अंतिम सिंचाई: उपज और गुणवत्ता का निर्णायक चरण

रबी सीजन की प्रमुख फसल गेहूं देश की खाद्य सुरक्षा की रीढ़ है। किसान पूरे मौसम मेहनत करते हैं—उन्नत किस्मों का चयन, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, खरपतवार नियंत्रण और समय पर सिंचाई—लेकिन अक्सर एक छोटी-सी चूक अंतिम सिंचाई के समय हो जाती है, जिसका सीधा असर उपज और दाने की गुणवत्ता पर पड़ता है। गेहूं की अंतिम सिंचाई केवल पानी देने की प्रक्रिया नहीं, बल्कि दाना भराव और उत्पादन क्षमता तय करने वाला महत्वपूर्ण चरण है।

क्यों महत्वपूर्ण है अंतिम सिंचाई?

गेहूं में दाना भरने की अवस्था (Milk से Dough स्टेज) के दौरान पौधे को पर्याप्त नमी की आवश्यकता होती है। यदि इस समय खेत में नमी की कमी हो जाए, तो दाने सिकुड़ जाते हैं, हजार दाना वजन कम हो जाता है और उत्पादन में गिरावट आती है। दूसरी ओर, आवश्यकता से अधिक पानी देने पर फसल गिरने (लॉजिंग) का खतरा बढ़ता है और दाने की चमक व गुणवत्ता प्रभावित होती है।

सही समय क्या है?

विशेषज्ञों के अनुसार गेहूं की अंतिम सिंचाई दूधिया अवस्था (Milk Stage) में करनी चाहिए। यह अवस्था आमतौर पर बुवाई के 90–100 दिन बाद आती है, हालांकि यह किस्म और जलवायु पर निर्भर करती है। किसान यदि बालियों को हल्का दबाकर देखें और उसमें से दूध जैसा द्रव निकले, तो यह अंतिम सिंचाई का सही समय है। अंतिम सिंचाई हल्की और नियंत्रित होनी चाहिए। खेत में जलभराव नहीं होना चाहिए। सामान्यतः 5–6 सेंटीमीटर पानी पर्याप्त रहता है। हल्की मिट्टी में थोड़ी कम मात्रा और भारी मिट्टी में संतुलित मात्रा देना उपयुक्त है।

अधिक सिंचाई से होने वाले नुकसान

कई किसान यह सोचकर अतिरिक्त पानी दे देते हैं कि इससे दाना अधिक भरेगा, लेकिन यह धारणा गलत है। ज्यादा नमी से जड़ क्षेत्र में ऑक्सीजन की कमी हो जाती है, जिससे पौधे कमजोर पड़ सकते हैं। साथ ही, फसल पकने में देरी और कटाई के समय नमी अधिक रहने से मंडी में कीमत पर भी असर पड़ सकता है।

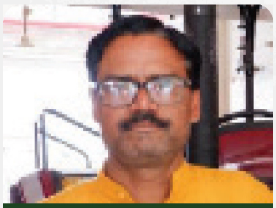

श्री दिलीप यादव
संपादक, मेरीखेती

सलाहकार मंडल

श्री छेदालाल पाठक
संरक्षक मार्गदर्शक

कृष्ण पाठक
फाउंडर, मेरीखेती

डॉ एम सी शर्मा
सेवानिवृत्त निदेशक एवं कुलपति आईवीआरआई इज्जतनगर

प्रो. ए पी सिंह
पूर्व कुलपति, वेटरनरी विश्व विद्यालय, मथुरा

डॉ. एस. के. गर्ग
कुलपति राजस्थान यूनिवर्सिटी ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस

डॉ हरि शंकर गौड़
पूर्व कुलपति एसबीबीपीयूएटी, मेरठ, साइंटिस्ट, गलगोटिया विश्वविद्यालय

डॉ. ओमवीर सिंह
निदेशक बीज प्रमाणीकरण (सेवानिवृत्त) उत्तर प्रदेश

डॉ उदय भान सिंह
डीन कृषि महाविद्यालय, कुम्हेर, भरतपुर, राजस्थान

डॉ. अनिल कुमार सिंह
प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा

डॉ एसके सिंह
प्रोफेसर सह मुख्य वैज्ञानिक डॉ. राजेंद्र प्रसाद केंद्रीय कृषि विश्वविद्यालय, पूसा बिहार

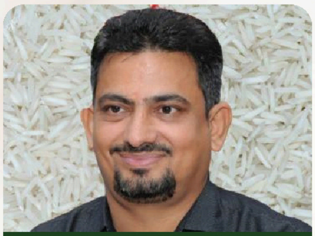

डॉ रितेश शर्मा
प्रधान वैज्ञानिक, बासमती निर्यात विकास फाउंडेशन (एपीडा, वाणिज्य मंत्रालय, भारत सरकार)

डॉ सी बी सिंह
एक्स – सीनियर साइंटिस्ट, IARI, पूसा

तेजपाल सिंह
प्रगतिशील किसान

मूंग की खेती कैसे की जाती है

मूंग एक महत्वपूर्ण दलहनी फसल है, जिसे ग्रीष्म (जायद) और खरीफ दोनों मौसमों में उगाया जा सकता है। यह अल्प अवधि में पकने वाली फसल है, जो किसानों के लिए लाभदायक होती है। इसका प्रमुख उपयोग दाल के रूप में किया जाता है, जिसमें 24-26% प्रोटीन, 55-60% कार्बोहाइड्रेट और लगभग 1.3% वसा पाई जाती है। मूंग एक नाइट्रोजन स्थिरीकरण करने वाली फसल है, जो अपनी जड़ों में उपस्थित ग्रंथियों के माध्यम से वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मृदा में स्थिर करने में सहायक होती है।
इसके अलावा, फसल की कटाई के बाद पौधे की पत्तियाँ और जड़ें लगभग 1.5 टन जैविक अवशेष प्रति हेक्टेयर भूमि में छोड़ती हैं, जिससे मिट्टी की उर्वरता में सुधार होता है।

भूमि और जलवायु

मूंग की खेती सिंचित और असिंचित दोनों क्षेत्रों में सफलतापूर्वक की जा सकती है। इसके लिए अच्छी जल निकासी वाली बलुई दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। मिट्टी में जैविक पदार्थों की प्रचुरता फसल की गुणवत्ता को बढ़ाती है और अधिक उत्पादन सुनिश्चित करती है।

मूंग की प्रमुख किस्में

मूंग की विभिन्न विकसित किस्में बाजार में उपलब्ध हैं, जिनमें से कुछ प्रमुख किस्में निम्नलिखित हैं:

- नरेंद्र मूंग-1
- पंत मूंग-2, पंत मूंग-4
- एच.यू.एम-6
- सुनैना
- जवाहर मूंग-45 और जवाहर मूंग-70

इनमें से प्रत्येक किस्म का चयन क्षेत्र की जलवायु और मिट्टी की विशेषताओं के आधार पर किया जाना चाहिए।

बीज की मात्रा एवं बुवाई का तरीका

- गर्मी के मौसम में: मूंग की बुवाई के लिए 8 किग्रा बीज प्रति एकड़ की आवश्यकता होती है। कतारों की दूरी 20-25 सेमी रखनी चाहिए।
- खरीफ मौसम में: बुवाई के लिए अधिक बीज की आवश्यकता होती है। कतारों की उचित दूरी बनाए रखकर बीजों को बोया जाना चाहिए।
- बीज उपचार: बीजों को कार्बेन्डाजिम से उपचारित करने के बाद ही बोना चाहिए, ताकि बीज जनित रोगों से बचाव हो सके।

बुवाई का समय

- जायद (ग्रीष्म) मौसम में: जहाँ सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो, वहाँ रबी फसलों की कटाई के तुरंत बाद मूंग की बुवाई कर देनी चाहिए।
- खरीफ मौसम में: बुवाई जून के दूसरे पखवाड़े से जुलाई के पहले पखवाड़े के बीच करनी चाहिए।
- बुवाई को कतारों में करना उचित रहता है, जिससे फसल की देखभाल और निराई-गुड़ाई में आसानी होती है।

खेती की तैयारी

खेत की गहरी जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से करनी चाहिए, जिससे मिट्टी की संरचना दुरुस्त हो जाए। इसके बाद 2-3 बार कल्टीवेटर या देशी हल से जुताई कर खेत को भुरभुरा बनाया जाता है। अंत में, सुहागा फेर कर खेत को समतल किया जाता है।

खाद और उर्वरक प्रबंधन

चूंकि मूंग एक दलहनी फसल है, इसलिए इसे अधिक नाइट्रोजन की आवश्यकता नहीं होती। हालांकि, बेहतर पैदावार के लिए प्रति एकड़ निम्नलिखित उर्वरकों का प्रयोग किया जाता है:

- नाइट्रोजन: 10 किग्रा
- फॉस्फोरस: 20 किग्रा
- पोटाश: 8-10 किग्रा
- गंधक: गंधक की कमी वाले क्षेत्रों में 8 किग्रा गंधकयुक्त उर्वरक देना लाभकारी होता है।

इन सभी उर्वरकों को बुवाई से पहले या बुवाई के समय ही मिट्टी में मिला देना चाहिए।

सिंचाई और जल निकासी

- खरीफ मौसम में: मूंग की फसल को सिंचाई की अधिक आवश्यकता नहीं होती। हालांकि, अत्यधिक वर्षा के दौरान खेत में जलभराव न होने देना बेहद आवश्यक है, क्योंकि इससे जड़ सड़न (Root Rot) जैसी बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है
- गर्मी (जायद) मौसम में: फसल को खरीफ की तुलना में अधिक पानी की जरूरत होती है। इसलिए, 15-20 दिनों के अंतराल पर 3-4 बार सिंचाई करना आवश्यक होता है।

खरपतवार नियंत्रण एवं निराई-गुड़ाई

- पहली निराई: बुवाई के 15-20 दिन बाद करनी चाहिए।
- दूसरी निराई: 40-45 दिनों बाद करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लूएक्लोरीन 45 EC (500 ग्राम) को 200 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ छिड़काव करें।

फसल सुरक्षा एवं रोग नियंत्रण

मूंग की फसल को कई प्रकार के कीट एवं रोग प्रभावित कर सकते हैं। इनका प्रभावी नियंत्रण निम्नलिखित उपायों द्वारा किया जा सकता है:

1. चूसक कीट (Aphids, Whitefly):
   - थायोमेथॉक्साम 25WG (0.3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।
2. पत्ती धब्बा रोग (Leaf Spot):
   - कार्बेन्डाजिम 50WP (1 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।
3. जड़ गलन रोग (Root Rot):
   - खेत में जल निकासी की समुचित व्यवस्था करें।
   - कापर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें।

उत्पादन एवं संभावित लाभ

- मूंग की औसत उपज 4-5 क्विंटल प्रति एकड़ होती है।
- यदि उन्नत तकनीकों और अच्छी देखभाल के साथ खेती की जाए, तो उत्पादन 7-8 क्विंटल प्रति एकड़ तक हो सकता है।

मूंग की वैज्ञानिक खेती से भूमि की उर्वरता भी बढ़ती है और किसानों को कम समय में अधिक लाभ मिल

MASSEY FERGUSON

MASSEY FERGUSON
254 DYNASMART

सकता है। यह फसल जलवायु परिवर्तन के अनुकूल होने के कारण कृषि क्षेत्र में स्थिरता बनाए रखने में भी सहायक है।

मार्च महीने में कृषि कार्य: गेहूँ, चना, गन्ना, सब्जियाँ और फल फसल प्रबंधन टिप्स

मार्च महीना आ गया है इस महीने में सभी रबी की फसलें पकाई के चरण पर होती हैं। मार्च महीने में किसानों को अपनी फसलों का विशेष ध्यान रखना होता हैं ताकि फसल की उपज में कमी आने से बचा जा सकें। इस लेख में हम आपको मार्च माह के कृषि संबंधी आवश्यक कार्यों के बारे में सम्पूर्ण जानकारी देंगे।

मार्च महीने में रबी फसलों में किए जाने वाले आवश्यक कार्य

मार्च महीने में रबी की फसलों में किए जाने वाले विशेष कार्य निम्नलिखित दिए गए हैं

गेहूँ और जौ

गेहूँ की फसल में प्रत्येक 2025 दिन के अंतराल पर सिंचाई करना आवश्यक है। सिंचाई के दौरान इस बात का विशेष ध्यान रखें कि हवा की गति अधिक न हो, क्योंकि तेज हवा से फसल गिरने की संभावना बढ़ जाती है।मौसम की स्थिति को देखते हुए किसान भाइयों को सलाह दी जाती है कि वे गेहूँ में पीला रतुआ रोग की नियमित निगरानी करें। यदि पत्तियों पर पीले रंग के धब्बे दिखाई दें, तो प्रभावित पत्तियों को ध्यानपूर्वक तोड़कर मिट्टी में दबा दें। व्यापक रूप से (मार्च के प्रथम पखवाड़े में) परिवर्तन होने पर पानी में घुलनशील गंधक का छिड़काव करें।

रोग के लक्षण उभरने पर प्रोपीकोनाजोल 25 ई.सी. का 0.1% घोल बनाकर छिड़काव करें। यदि रोग की गंभीरता अधिक हो, तो 10 दिन के अंतराल पर छिड़काव दोबारा करें।

यदि फसल चूने की अवस्था में हो, तो डाइथेन एम45 @2 मि.ली./लीटर पानी या ज़िनेब @2 ग्राम सक्रिय तत्व प्रति हेक्टेयर को 1000 लीटर पानी में मिलाकर छिड़कें। फफूंद संक्रमण अधिक होने की स्थिति में, 15 दिन बाद पुनः छिड़काव करें।

दलहनी फसलें

चना में फली छेदक कीट का आक्रमण दाना बनने की अवस्था में अधिक होता है। इसके नियंत्रण हेतु मोनोक्रोटोफॉस @1 लीटर या स्पिनोसैड/इमामेक्टिन बेंजोएट @250 मि.ली. को 600800 लीटर पानी में घोलकर फली आने के समय फसल पर छिड़काव करें। मटर की फसल में दाना बनने की अवस्था में हल्की सिंचाई करना लाभदायक होता है। फली छेदक कीट मसूर की फलियों को भी नुकसान पहुँचाता है और दानों को खा जाता है। इससे बचाव के लिए फेनवालरेट @750 मि.ली. या मोनोक्रोटोफॉस @750 मि.ली. को 600800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। मटर और मसूर की फसल में मार्च के पहले पखवाड़े तक कोमल भागों से रस चूसने वाले कीटों की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 50 ई.सी. @1 लीटर या फोसीलोन 25 ई.सी. @2 लीटर को 600800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें, जिससे इन कीटों के प्रकोप को प्रभावी रूप से नियंत्रित किया जा सके।

इस माह ग्रीष्मकालीन उड़द और मूंग की बुवाई की जा सकती है।

- **उड़द की उन्नतशील प्रजातियाँ**: आज़ाद उड़द 1, आज़ाद उड़द 2, पंत उड़द 19, पंत उड़द 30, पंत उड़द 35, बी.यू.1, केयू. 300, डब्ल्यू.बी.यू. 109 (सुलता), एल.यू. 391 और के.यू.जी. 479 आदि।
- **मूंग की उन्नतशील प्रजातियाँ:** पंत मूंग 2, नरेंद्र मूंग 1, भालवीय, जॉगीर, सम्राट, पूसा विशाल, पूसा 105, एम.यू. 11, एम.यू. 32, जनगंगा, माही, मानवीय और ज्योति आदि।
- **बीज दर:** उड़द/मूंग की उत्तम गुणवत्ता के लिए बीज दर 1520 कि.ग्रा./हेक्टेयर होनी चाहिए।
- **बीज शोधन**: बुवाई से पूर्व बीज को 2.5 ग्राम थीरम अथवा 2 ग्राम थीरम + 1 ग्राम कार्बोक्सिन प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करें, जिससे फसल को बीमारियों से बचाया जा सके।

चारा फसलों की बुवाई

इस माह में ज्वार, बाजरा, मक्का, लोबिया और चवला जैसी चारा फसलों की सफलतापूर्वक खेती की जा सकती है। चारा उत्पादन के लिए उन्नतशील किस्मों का चयन करें। बेहतर उपज के लिए संकर ज्वार की बुवाई उपयुक्त होती है।

बीज उपचार: बीज को बुवाई से पहले थीरम या बाविस्टिन @2.5 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें, जिससे बीज जनित रोगों से बचाव हो सके।

गन्ने की बुवाई

उत्तर भारत में इस माह भी गन्ने की बुवाई जारी रहेगी। बीज टुकड़े रोगमुक्त होने चाहिए, क्योंकि संक्रमित बीज से फसल में रोग फैलने की संभावना बढ़ जाती है।

बीज सुरक्षा: बुवाई से पहले बीज टुकड़ों को 0.2% उपयुक्त रसायन के घोल में उपचारित करें ताकि वे पूरी तरह सुरक्षित रहें और स्वस्थ पौधों का विकास हो सके।

बरसीम में बीज उत्पादन

रबी मौसम में बरसीम चारे की एक महत्वपूर्ण फसल के रूप में उभरकर आई है। इसका बीज बाजार में महंगा मिलता है, जिससे किसान स्वयं बीज उत्पादन कर अच्छा लाभ कमा सकते हैं।

उच्च गुणवत्ता वाले बीज उत्पादन के लिए सावधानियाँ:

1. **समय पर कटाई:** अधिक उत्पादन और गुणवत्ता युक्त बीज प्राप्त करने के लिए फसल की कटाई महीने के दूसरे सप्ताह के बाद करें और इसे बीज उत्पादन के लिए छोड़ दें।
2. **नमी बनाए रखना:** बीज बनने तक खेत में पर्याप्त नमी बनी रहनी चाहिए, इसके लिए आवश्यकतानुसार सिंचाई करें। विशेष रूप से फूल आने और दाना भरने की अवस्था में सिंचाई जरूरी है।
3. **परागण का ध्यान रखें:** मधुमक्खियाँ परागण में सहायक होती हैं, अतः उनके संरक्षण पर ध्यान दें।
4. **खरपतवार नियंत्रण:** फूल आने के बाद खेत में खरपतवार नियंत्रण आवश्यक है, ताकि बीज उत्पादन प्रभावित न हो।
5. **बीज पकने पर फसल उठाएँ:** जब बीज पकने की अवस्था में झड़ने लगे, तो इसे खेत से उठाकर बाहर करें।
6. **सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव:** फूल अवस्था में सूक्ष्म पोषक तत्वों के छिड़काव से बीज उत्पादन में वृद्धि होती है। बाजार में उपलब्ध सूक्ष्म पोषक तत्वों के मिश्रण का उपयोग आवश्यकतानुसार किया जा सकता है।

हरी खाद की फसलें

रबी फसलों की कटाई के बाद खाली खेतों में मृदा उर्वरता वृद्धि के लिए हरी खाद वाली फसलों की बुवाई की जा सकती है। हरी खाद के लिए मुख्य रूप

से दलहनी फसलें उगाई जाती हैं।दलहनी फसलें मृदा की भौतिक दशा का सुधार करने के अलावा उसमें जीवांश पदार्थ की मात्रा भी बढ़ाती हैं। हरी खाद के प्रयोग से अगली फसल में उर्वरकों की कम आवश्यकता होती है। हरी खाद की फसलों में ढैंचा, सनई, लोबिया तथा ज्वार, इत्यादि मुख्य हैं। मुख्य नकदी फसल के साथ हरी खाद स्थान, समय, जल तथा अन्य सीमित संसाधनों के साथ प्रतिस्पर्धा करती है, इसी कारण हरी खाद के उपयोग में बहुत बाधाएं हैं।

सब्जियाँ

सब्जियों में कीटों का आक्रमण: सब्जियों में चेपा का आक्रमण की निगरानी करते रहें। वर्तमान तापमान में यह कीट जल्दी ही नष्ट हो जाते हैं। यह कीट कोमल हिस्सों को अधिक हानि पहुँचाते हैं, इसलिए इमिडाक्लोप्रिड @ 0.25 मिली. प्रति लीटर पानी में घोलकर फसलों पर छिड़काव करें। छिड़काव के बाद आसमान साफ़ होने पर धूप में फसलों पर पानी का असर बना रहे।

सब्जियों की बुवाई: इस माह कर सकते हैं। जैसे–

- **भिंडी:** परभणी क्रांति और अन्य किस्मों की बुवाई करें। बीज की मात्रा 2025 किग्रा./हेक्टेयर रखें। बुवाई से पूर्व बीज को 2 ग्राम कैप्टन अथवा थीरम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- **लोबिया:** हरी सब्जी वाली लोबिया की बुवाई करें। उन्नतशील किस्मों जैसे पूसा कोमल, पूसा सुखलता, पूसा फरमिनी की बुवाई करें। बुवाई से पूर्व बीज को थीरम या कैप्टन @ 2 ग्राम प्रति किग्रा. बीज की दर से उपचारित करें।
- **अन्य सब्जियाँ:** बैंगन–पौंडर, जानीगोल्ड लॉन्ग, पूसा संयोग, शिमला मिर्च–पूसा संदीप, पूसा संजुक्ति, करेला–पूसा दो समर, टिंडा–पूसा स्नेह, टमाटर–पूसा संदर, आदि की बुवाई करें।

आम और फलों की देखभाल

आम के भुनगे का अत्यधिक प्रकोप होने की स्थिति में मोनोक्रोटोफास अथवा डायमेथोएट @ 0.05% घोल का छिड़काव करें। आम में खैर रोग का प्रकोप होने पर डाइनोकैप 0.05% का छिड़काव आवश्यक होता है। भुनगा कीट एवं खैर रोग की रोकथाम के लिए कीटनाशी एवं कवकनाशी का एक साथ मिलाकर छिड़काव किया जा सकता है।

फलदार वृक्षों की देखभाल:

- अंगूर, आड़ू और अन्य पतझड़ी फलों में नमी बनाए रखने के लिए सिंचाई करें।
- ग्रीष्मकालीन गन्ने की रोपाई से पहले खेत में उर्वरकों की संतुलित मात्रा डालें और उचित नमी बनाए रखें।
- खरपतवारों की रोकथाम करें ताकि फसलों को सही पोषण और नमी मिल सके।

खीरे की उन्नत खेती से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी

कद्दूवर्गीय फसलों में खीरा का अपना एक विशेष स्थान है। क्योंकि भोजन के साथ सलाद के रूप में खीरा सबसे ज्यादा उपयोग होने वाली फसल है।

इस वजह से खीरा का उत्पादन देश के सभी हिस्सों में किया जाता है। गर्मियों में खीरे की बाजार में प्रचंड मांग बनी रहती है। इसे मुख्यत: भोजन के साथ सलाद के तौर पर कच्चा खाया जाता है। ये शरीर को गर्मी से शीतलता प्रदान करता है और हमारे शरीर में पानी की कमी को भी पूरा करता है। इसलिए गर्मियों में इसका सेवन करना बेहद लाभकारी बताया गया है। खीरे की गर्मियों में बाजार मांग को मद्देनजर रखते हुए जायद सीजन में इसकी खेती करके शानदार मुनाफा अर्जित किया जा सकता है।

खीरे की फसल में पाएं जाने वाले पोषक तत्व

खीरे का वानस्पतिक नाम कुकुमिस स्टीव्स है। यह एक बेल की भाँति लटकने वाला पौधा है। खीरे के पौधे का आकार बड़ा, पत्ते बेलों वाले और त्रिकोणीय आकार के होते है और इसके फूल पीले रंग के होते हैं। खीरे में 96 फीसद पानी होता है, जो गर्मी के मौसम में लाभकारी होता है। खीरा एम बी (मोलिब्डेनम) और विटामिन का एक शानदार स्त्रोत है। खीरे का प्रयोग दिल, त्वचा और किडनी की दिक्कतों के इलाज और अल्कालाइजर के तौर पर किया जाता है।

खीरे की विभिन्न प्रकार की उन्नत किस्में

खीरे की कुछ उन्नत भारतीय किस्में- पंजाब सलेक्शन, पूसा संयोग, पूसा बरखा, खीरा 90, कल्यानपुर हरा खीरा, कल्यानपुर मध्यम, स्वर्ण अगेती, स्वर्ण पूर्णिमा, पूसा उदय, पूना खीरा और खीरा 75 आदि प्रमुख हैं।

खीरे की नवीनतम किस्में- पीसीयूएच- 1, पूसा उदय, स्वर्ण पूर्णा और स्वर्ण शीतल आदि प्रमुख है।

खीरे की संकर किस्में- पंत संकर खीरा- 1, प्रिया, हाइब्रिड- 1 और हाइब्रिड- 2 आदि प्रमुख है।

खीरे की विदेशी किस्में- जापानी लौंग ग्रीन, चयन, स्ट्रेट- 8 और पोइनसेट आदि प्रमुख है।

खीरे की उन्नत खेती के लिए जलवायु व मृदा

सामान्य तौर पर खीरे को रेतीली दोमट व भारी मृदा में उत्पादित किया जाता है। परंतु, इसकी खेती के लिए एक बेहतर जल निकास वाली बलुई एवं दोमट मृदा उपयुक्त रहती है। खीरे की खेती के लिए मृदा का पीएच मान 6-7 के मध्य होना चाहिए। क्योंकि, यह पाला सहन नहीं कर सकता है। इसकी खेती उच्च तापमान में काफी बेहतरीन होती है। इसलिए जायद सीजन में इसकी खेती करना अच्छा रहता है।

जायद सीजन में इन फसलों की बुवाई कर किसान अच्छा लाभ उठा सकते हैं

रबी की फसलों की कटाई का समय लगभग आ ही गया है। अब इसके बाद किसान भाई अपनी जायद सीजन की फल एवं सब्जियों की बुवाई शुरू करेंगे। बतादें, कि गर्मियों में खाए जाने वाले प्रमुख फल और सब्जियां जायद सीजन में ही उगाए जाते हैं। इन फल-सब्जियों की खेती में पानी की खपत बहुत ही कम होती है। परंतु, गर्मियां आते ही बाजार में इनकी मांग काफी बढ़ जाती है।

उदाहरण के लिए सूरजमुखी, तरबूज, खरबूज, खीरा, ककड़ी सहित कई फसलों की उपज लेने के लिए जायद सीजन में बुवाई करना लाभदायक माना जाता है। यह मध्य फरवरी से चालू होता है।

उसके बाद मार्च के समापन तक फसलों की बुवाई

कर दी जाती है। फिर गर्मियों में भरपूर उत्पादन हांसिल होता है। मई, जून, जुलाई, जब भारत गर्मी के प्रभाव से त्रस्त हो जाता है। उस समय शायद सीजन की यह फसलें ही पानी की उपलब्धता को सुनिश्चित करती हैं। खीरा मानव शरीर को स्वस्थ भी रखता है। इस वजह से बाजार में इनकी मांग अचानक से बढ़ जाती है, जिससे किसानों को भी अच्छा-खासा मुनाफा प्राप्त होता है। शीघ्र ही जायद सीजन दस्तक देने वाला है।

ऐसे में किसान खेतों की तैयारी करके प्रमुख चार फसलों की बिजाई कर सकते हैं। ताकि आने वाले समय में उनको बंपर उत्पादन प्राप्त हो सके।

सूरजमुखी

सामान्य तौर पर सूरजमुखी की खेती रबी, खरीफ और जायद तीनों ही सीजन में आसानी से की जा सकती है। लेकिन जायद सीजन में बुवाई करने के बाद फसल में तेल की मात्रा कुछ ज्यादा बढ़ जाती है। किसान चाहें तो रबी की कटाई के पश्चात सूरजमुखी की बुवाई का कार्य कर सकते हैं। वर्तमान में देश में खाद्य तेलों के उत्पादन को बढ़ाने की कवायद की जा रही है। ऐसे में सूरजमुखी की खेती करना अत्यंत फायदे का सौदा साबित हो सकता है। बाजार में इसकी काफी शानदार कीमत मिलने की संभावना रहती है।

तरबूज

विभिन्न पोषक तत्वों से युक्त तरबूज तब ही लोगों की थाली तक पहुंचता है, जब फरवरी से मार्च के मध्य इसकी बुवाई की जाती है। यह मैदानी इलाकों का सर्वाधिक मांग में रहने वाला फल है। खास बात यह है, की पानी की कमी को पूरा करने वाला यह फल काफी कम सिंचाई एवं बेहद कम खाद-उर्वरक में ही तैयार हो जाता है। तरबूज की मिठास और इसकी उत्पादकता को बढ़ाने के लिए वैज्ञानिक तरीके से तरबूज की खेती करने की सलाह दी जाती है। यह एक बागवानी फसल है, जिसकी खेती करने के लिए सरकार अनुदान भी उपलब्ध कराती है। इस प्रकार कम खर्चे में भी तरबूज उगाकर शानदार धनराशि कमाई जा सकती है।

खरबूज

तरबूज की तरह खरबूज भी एक कद्दूवर्गीय फल है। खरबूज आकार में तरबूज से थोड़ा छोटा होता है। परंतु, मिठास के संबंध में अधिकांश फल खरबूज के समक्ष फेल हैं। पानी की कमी एवं डिहाइड्रेशन को दूर करने वाले इस फल की मांग गर्मी आते ही बढ़ जाती है।खरबूज की खेती से बेहतरीन उत्पादकता प्राप्त करने के लिए मृदा का उपयोग होना अत्यंत आवश्यक है। हल्की रेतीली बलुई मृदा खरबूज की खेती के लिए उपयुक्त मानी गई है। किसान भाई चाहें तो खरबूज की नर्सरी तैयार करके इसके पौधों की रोपाई खेत में कर सकते हैं। खेतों में खरबूज के बीज लगाना बेहद ही आसान होता है। अच्छी बात यह है, कि इस फसल की खेती के लिए भी ज्यादा सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती। असिंचित इलाकों में भी खरबूज की खेती से अच्छी पैदावार प्राप्त की जा सकती है।

खीरा

गर्मियों में खीरा का बाकी फलों से अधिक उपयोग होता है। खीरा की तासीर काफी ठंडी होने की वजह से सलाद से लेकर जूस के तौर पर इसका सेवन किया जाता है। शरीर में पानी की कमी को पूरा करने वाला यह फल भी अप्रैल-मई से ही मांग में रहता है। मचान विधि के द्वारा खीरा की खेती करके शानदार उत्पादकता प्राप्त की जा सकती है। इस प्रकार कीट-रोगों के प्रकोप का संकट बना ही रहता है। फसल भूमि को नहीं छूती, इस वजह से सड़न-गलन की संभावना कम रहती है। नतीजतन फसल भी बर्बाद नहीं होती है। खीरा की खेती के लिए नर्सरी तैयार करने की राय दी जाती है। किसान भाई खीरा को भी रेतीली दोमट मृदा में उगाकर शानदार उपज प्राप्त कर सकते हैं।

खीरा की बीज रहित किस्मों का चलन काफी तेजी से बढ़ता जा रहा है। किसान भाई यदि चाहें तो खीरा की उन्नत किस्मों की खेती करके मोटा मुनाफा अर्जित कर सकते हैं।

ककड़ी

खीरा की भांति ककड़ी की भी अत्यंत मांग रहती है। इसका भी सलाद के रूप में सेवन किया जाता है। उत्तर भारत में ककड़ी का बेहद चलन है। खीरा और ककड़ी की खेती तकरीबन एक ही ढ़ंग से की जाती है। किसान चाहें तो खेत के आधे भाग में खीरा और आधे भाग में ककड़ी उगाकर भी अतिरिक्त आमदनी उठा सकते हैं। अगर मचान विधि से खेती कर रहे हैं, तो भूमि पर खरबूज और तरबूज उगा सकते हैं। शायद सीजन का मेन फोकस गर्मियों में फल-सब्जियों की मांग को पूर्ण करना है।

साथ ही, इन चारों फल-सब्जियों की मांग बाजार में बनी रहती है। इसलिए इनकी खेती भी किसानों के लाभ का सौदा सिद्ध होगी।

तोरई जी उन्नत किस्में जो की देगी अधिक पैदावार

भारत में तोरई की खेती विभिन्न जलवायु क्षेत्रों में व्यापक रूप से की जाती है। यह एक लोकप्रिय सब्जी है जो पौष्टिकता से भरपूर होती है और हाजमा सुधारने के लिए जानी जाती है। तोरई मुख्यतः दो प्रकार की होती है – धारदार तोरई (Ridge Gourd) और स्पंज तोरई (Sponge Gourd)। दोनों ही किस्में लूफा (Luffa) वंश की हैं और इनमें एक विशेष जिलेटिनस यौगिक "लूफेन" पाया जाता है, जो स्वास्थ्य के लिए लाभदायक होता है। तोरई की खेती मुख्य रूप से गर्म और आर्द्र जलवायु में होती है, लेकिन कुछ किस्में शरद और वर्षा ऋतु में भी सफलतापूर्वक उगाई जा सकती हैं।

यह बेलवाली फसल होती है और इसके लिए मध्यम उपजाऊ दोमट मिट्टी सबसे उपयुक्त मानी जाती है। खेत की अच्छी जल निकासी, पर्याप्त धूप और सिंचाई व्यवस्था फसल की गुणवत्ता और उत्पादन को प्रभावित करती है।

धारदार तोरई की प्रमुख किस्में

इस प्रकार की तोरई की कुछ उन्नत किस्मों का विवरण पहले दिया गया है। इन किस्मों की विशेषताएं जैसे कि फलों की लंबाई, मोटाई, वजन, उपज क्षमता, रोग प्रतिरोधकता और पकने की अवधि भिन्न होती हैं। अर्का सुमीत, स्वर्ण मंजरी और स्वर्ण उपहार जैसी किस्में अधिक उपज देने वाली और रोग प्रतिरोधक मानी जाती हैं, जबकि पंत तोरई-1 जैसी किस्में वर्षा ऋतु के लिए उपयुक्त मानी जाती हैं।

स्पंज तोरई की प्रमुख किस्में

स्पंज तोरई की किस्में हल्के और चिकने फलों के लिए जानी जाती हैं। इनमें पुसा चिकनी, पुसा स्नेहा, और राजेन्द्र-1 जैसी किस्में प्रमुख हैं। इन किस्मों की विशेषता है – चिकना गूदा, रोग प्रतिरोधक क्षमता, अच्छी पैकिंग योग्य फल और लंबी दूरी तक परिवहन की सुविधा। पुसा स्नेहा को विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयुक्त माना जाता है जो अपने उत्पाद को दूर के बाजारों तक पहुँचाना चाहते हैं। वहीं राजेन्द्र-1 रोग प्रतिरोधक किस्म होने के कारण कम देखभाल में भी अच्छी उपज देती है।

खेती की कुछ महत्वपूर्ण सिफारिशें

- बोवाई का समय: उत्तरी भारत में गर्मी की फसल के लिए फरवरी-मार्च और वर्षा ऋतु की फसल के लिए जून-जुलाई उपयुक्त समय है।

- बीज दर: प्रति हेक्टेयर 4-5 किलोग्राम बीज पर्याप्त होते हैं।
- सिंचाई: गर्मी के मौसम में 5-7 दिन के अंतराल पर और वर्षा ऋतु में आवश्यकता अनुसार सिंचाई करें।
- खाद प्रबंधन: 15-20 टन गोबर की खाद, 60 किलो नाइट्रोजन, 40 किलो फॉस्फोरस, और 40 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर देना चाहिए।
- रोग नियंत्रण: पाउडरी मिल्ड्यू, एन्थ्रेक्नोज और फल मक्खी जैसे रोगों से बचाव के लिए जैविक कीटनाशकों और रोग प्रतिरोधक किस्मों का चयन करें।

तोरई की खेती न केवल घरेलू उपयोग के लिए लाभकारी है बल्कि व्यावसायिक दृष्टिकोण से भी किसानों के लिए आय का एक अच्छा स्रोत बन सकती है। यदि उन्नत किस्मों का चयन कर सही तकनीक से खेती की जाए, तो कम लागत में अधिक उत्पादन संभव है। रोग प्रतिरोधक, अधिक उपज वाली और विपणन योग्य किस्मों का चयन कर किसान बेहतर मुनाफा कमा सकते हैं।

खरबूजा की खेती: जलवायु, मिट्टी, बुवाई विधि और अधिक उत्पादन के टिप्स

खरबूजा, जो ककड़ी परिवार का सदस्य है, भारत में बड़े पैमाने पर उगाया जाता है। इसकी खेती मुख्य रूप से शुष्क मौसम में, यानी जायद के मौसम में की जाती है। देश के उत्तरी हिस्सों जैसे पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, मध्य प्रदेश और बिहार के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में खरबूजा की खेती बहुतायत में होती है। यह फल मीठा होता है, जिसके कारण इसे ताजे रूप में ही खाया जाता है। खरबूजे में उच्च मात्रा में कार्बोहाइड्रेट, विटामिन A और C पाए जाते हैं। इसके बीजों में 40-45% तक तेल होता है। औषधीय दृष्टिकोण से भी खरबूजा बहुत महत्वपूर्ण है। इस लेख में हम आपको खरबूजा की खेती से जुड़ी सारी जानकारी देंगे, जिससे आप भी इस खेती को अपनाकर अच्छा मुनाफा कमा सकते हैं।

जलवायु और मिट्टी

खरबूजा एक शुष्क जलवायु में उगने वाला पौधा है। इसकी खेती भारत के शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में विशेष रूप से जायद के मौसम में होती है। अच्छी उपज के लिए बालू-दोमट मिट्टी आदर्श मानी जाती है, जिसमें जल निकासी की उचित व्यवस्था होनी चाहिए, क्योंकि यह पौधा अधिक नमी को पसंद नहीं करता है। मिट्टी का पीएच मान 6-7 होना चाहिए।

खेत की तैयारी

खरबूजे के बीजों की बुवाई से पहले खेत की अच्छी तरह से तैयारी करनी चाहिए, ताकि बीजों की वृद्धि अच्छी हो सके। खेत को 2-3 बार हैरो या कल्टीवेटर से समतल किया जाना चाहिए। 1 अंतिम जुताई के समय 4-5 टन गोबर की खाद को मिट्टी में अच्छे से मिला लेना चाहिए। उत्तरी भारत में बुवाई फरवरी के अंत से मार्च तक की जाती है, जिसे जायद का मौसम कहा जाता है।

बीज की मात्रा और बुवाई का तरीका

खरबूजे की बुवाई के लिए 600-800 ग्राम बीज प्रति एकड़ का उपयोग कि या जाता है। बुवाई से

पहले खेत की नमी की जांच करना जरूरी है। बीजों को खेत में क्यारियों में 0.5-1 मीटर की दूरी पर बोना चाहिए, जिससे पौधों के लिए पर्याप्त जगह मिल सके। पहले खेत की नमी की जांच करना जरूरी है। बीजों को खेत में क्यारियों में 0.5-1 मीटर की दूरी पर बोना चाहिए, जिससे पौधों के लिए पर्याप्त जगह मिल सके।

रजनीगंधा (Tuberose) की व्यावसायिक खेती से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी

रजनीगंधा, जिसे ट्यूबरोज (Tuberose) के नाम से भी जाना जाता है, एक अत्यंत सुगंधित फूल है जो अपनी सुंदरता और गंध के कारण पुष्प बाजार में बहुत अधिक मांग में रहता है। यह न केवल सजावट व पूजा-पाठ के लिए उपयोगी है, बल्कि इससे इत्र व परफ्यूम भी बनाए जाते हैं। इसकी खेती किसानों के लिए एक लाभदायक व्यवसाय सिद्ध हो सकती है। इस लेख में हम रजनीगंधा की खेती से जुड़ी संपूर्ण जानकारी विस्तारपूर्वक 1500 शब्दों में प्रस्तुत कर रहे हैं।

रजनीगंधा की खेती में किए जाने वाले प्रमुख कार्य

1. रजनीगंधा की प्रमुख किस्में (Varieties)

रजनीगंधा की किस्में मुख्यतः दो प्रकार की होती हैं - सिंगल और डबल। सिंगल किस्मों में फूलों की पंखुड़ियाँ एक कतार में होती हैं जबकि डबल किस्मों में यह दो या अधिक कतारों में होती हैं।

सिंगल किस्में:

- कलकत्ता सिंगल
- मेक्सिकन सिंगल
- फुले रजनी
- प्राज्वल
- रजत रेखा
- श्रृंगार
- खाहिकुची सिंगल
- हैदराबाद सिंगल
- पुणे सिंगल
- अर्का निरंतर

इन किस्मों से सुगंधित फूलों के साथ-साथ इत्र (कंक्रीट) का अच्छा उत्पादन लिया जा सकता है।

डबल किस्में:

- कलकत्ता डबल
- हैदराबाद डबल
- पर्ल डबल
- स्वर्ण रेखा
- सुवासिनी
- वैभव

डबल किस्में मुख्यतः सजावटी उपयोग और कट फ्लावर के रूप में लोकप्रिय हैं।

2. जलवायु (Climate)

रजनीगंधा की सफल खेती के लिए उष्णकटिबंधीय जलवायु की आवश्यकता होती है। इसकी वृद्धि के लिए आदर्श तापमान 28°C से 30°C तक होता है। यह पौधा गर्म और आर्द्र जलवायु में अच्छे से पनपता है। अत्यधिक ठंडी या पाला ग्रस्त जलवायु इसके लिए हानिकारक होती है।

3. मृदा (Soil)

लगे हटके
करे हटके
बोल्ड एंड ब्लैक
DIGITRAC
PP43i
37.3 kW श्रेणी
50 HP श्रेणी

रजनीगंधा की खेती के लिए अच्छे जलनिकास वाली बलुई दोमट (loamy) मिट्टी सर्वोत्तम मानी जाती है। मिट्टी का pH मान 6.5 से 7.5 के बीच होना चाहिए। भारी मिट्टी में जल जमाव से कंद सड़ने की आशंका रहती है, इसलिए खेत की उचित जल निकासी व्यवस्था होनी चाहिए।

4. प्रचार एवं रोपण (Propagation and Planting)

रजनीगंधा का प्रचार मुख्यतः बल्बों (Corms) के माध्यम से किया जाता है।

- बल्ब का वजन: 25-30 ग्राम
- रोपण समय: जून से जुलाई
- बल्ब मात्रा: 1,12,000 कंद/हेक्टेयर
- अंतर: 45 x 20 सेमी.
- गहराई: 2.5 सेमी.

विशेष तकनीक:

बल्बों को पूर्व फसल की खुदाई के 30 दिनों बाद रोपा जाता है।

रोपण से पहले बल्बों को CCC (Chlormequat chloride) 5000 ppm (5 ग्राम/लीटर) के घोल में डुबाना चाहिए। इससे पौधे की कद वृद्धि नियंत्रित होती है और फूलों की संख्या में वृद्धि होती है।

5. खाद और उर्वरक प्रबंधन (Manuring and After Cultivation)

प्राकृतिक खाद:

- एफ.वाई.एम (गोबर की खाद): 25 टन/हेक्टेयर

रासायनिक उर्वरक (IIHR सिफारिश):

- नाइट्रोजन (N): 200 किग्रा/हेक्टेयर
- फॉस्फोरस (P): 200 किग्रा/हेक्टेयर
- पोटाश (K): 200 किग्रा/हेक्टेयर

फॉस्फोरस और पोटाश की पूरी मात्रा भूमि तैयार करते समय देनी चाहिए जबकि नाइट्रोजन को तीन बराबर हिस्सों में बाँटना चाहिए – एक भाग भूमि तैयारी के समय, दूसरा 60 दिन बाद और तीसरा 90 दिन बाद।

6. सूक्ष्म पोषक तत्वों का प्रबंधन (Micronutrients)

फसल की गुणवत्ता और उत्पादन बढ़ाने के लिए सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव आवश्यक है। इसके लिए निम्नलिखित मिश्रण का छिड़काव करें:

- जिंक सल्फेट ($ZnSO_4$): 0.5%
- फेरस सल्फेट ($FeSO_4$): 0.2%
- बोरिक एसिड: 0.1%

यह फोलियर स्प्रे फसल की अच्छी वृद्धि और फूलों की गुणवत्ता सुनिश्चित करता है।

7. वृद्धि नियामक (Growth Regulators)

- फूलों की संख्या और कंक्रीट उत्पादन बढ़ाने के लिए GA_3 (Gibberellic acid) का प्रयोग किया जाता है।
- GA_3 की मात्रा: 50 से 100 ppm
- छिड़काव का समय: रोपण के 40, 55 और 60 दिन बाद (तीन बार)

8. फसल अवधि (Crop Duration)

रजनीगंधा की फसल की अवधि लगभग 2 वर्ष तक होती है। यदि पौधों की देखभाल और पोषण सही तरीके से किया जाए तो इसे एक और वर्ष तक लाभप्रद रूप से बनाए रखा जा सकता है।

9. कटाई और तुड़ाई (Harvesting)

- ढीले फूलों और इत्र निर्माण हेतु:
- सुबह 8 बजे से पहले खुले हुए फूलों को सावधानीपूर्वक तोड़ा जाता है।

कट फ्लावर के लिए:

- पूर्ण spike को नीचे से 4-6 सेमी ऊपर से

काटा जाता है। यह व्यापारिक बाजार में उच्च मांग में होता है।

निष्कर्ष

रजनीगंधा की खेती आज के समय में अत्यधिक लाभदायक व्यवसाय बन गई है। इसकी सुंदरता और सुगंध के चलते यह राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुष्प बाजार में निरंतर मांग में बनी रहती है।

यदि किसान वैज्ञानिक पद्धतियों से इसकी खेती करें तो प्रति हेक्टेयर लाखों रुपये की आय प्राप्त की जा सकती है। रजनीगंधा न केवल फूल के रूप में लाभ देती है, बल्कि बल्ब, सुगंध तेल और कट फ्लावर के रूप में भी कमाई का स्रोत बन सकती है।

हल्दी की टॉप 5 किस्में: ज्यादा उत्पादन देने वाली प्रमुख हल्दी की वैराइटी

हल्दी की प्रमुख किस्में: आधुनिक खेती में ज्यादा उत्पादन वाली वैराइटी

हल्दी भारतीय मसालों में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह सिर्फ रसोई तक ही सीमित नहीं है,बल्कि औषधीय गुणों और धार्मिक उपयोगों के कारण इसकी मांग हर मौसम में बनी रहती है। हल्दी के बिना भारतीय व्यंजन अधूरे लगते हैं। यही कारण है कि हल्दी को “गोल्डन स्पाइस” भी कहा जाता है। इसके औषधीय तत्व करक्यूमिन (Curcumin) शरीर को रोग प्रतिरोधक क्षमता प्रदान करते हैं और कई आयुर्वेदिक दवाओं में इसका प्रयोग किया जाता है। किसानों के लिए यह नकदी फसल (Cash Crop) बेहतर आय का जरिया बन सकती है क्योंकि इसकी मांग घरेलू और अंतरराष्ट्रीय दोनों बाजारों में लगातार बनी रहती है। हल्दी की खेती एक बार करने पर लंबे समय तक लाभ देती है। विशेष रूप से मई से जून का समय हल्दी की बुवाई के लिए सबसे उपयुक्त माना जाता है। आज हम आपको हल्दी की उन टॉप 5 किस्मों के बारे में बता रहे हैं, जो न केवल जल्दी तैयार होती हैं बल्कि ज्यादा उत्पादन भी देती हैं।

1. हल्दी की सिम पीतांबर किस्म

यह किस्म किसानों के लिए बहुत लाभदायक साबित हो सकती है। इसे केंद्रीय औषधीय एवं सगंध पौधा अनुसंधान संस्थान (CIMAP) द्वारा विकसित किया गया है।

- उत्पादन क्षमता: प्रति हेक्टेयर लगभग 65 टन हल्दी कंद।
- पकने की अवधि: 7 से 9 महीने।
- विशेषता: इस किस्म में कीट प्रकोप बहुत कम देखा जाता है और इसकी पत्तियां धब्बा रोग से सुरक्षित रहती हैं।
- लाभ: इस किस्म की खेती से किसानों को बेहतर क्वालिटी के साथ उच्च उत्पादन मिलता है, जिससे उन्हें बाजार में अच्छे दाम प्राप्त हो सकते हैं।

2. हल्दी की सुंगधम किस्म

यह किस्म किसानों के बीच लोकप्रिय है क्योंकि इसके कंद लंबे और हल्की लालिमा लिए हुए पीले रंग के होते हैं।

- उत्पादन क्षमता: प्रति एकड़ 80 से 90 क्विंटल।
- पकने की अवधि: 210 दिन।
- विशेषता: इस किस्म में हल्की सुगंध होती है, जिससे इसका बाजार मूल्य अधिक हो जाता है।
- लाभ: ज्यादा उत्पादन और बाजार में मांग अधिक होने के कारण किसानों की आमदनी बढ़ती है।

3. हल्दी की सोरमा किस्म

यह किस्म अपनी रंगत और उपज क्षमता के लिए जानी जाती है।

- उत्पादन क्षमता: प्रति एकड़ 80 से 90 क्विंटल।
- पकने की अवधि: 210 दिन।
- विशेषता: इसके कंद नारंगी रंग के होते हैं, जो बाजार में ज्यादा आकर्षण पैदा करते हैं।
- लाभ: निर्यात बाजार के लिए उपयुक्त किस्म है, क्योंकि विदेशी बाजारों में नारंगी रंग की हल्दी की मांग अधिक रहती है।

4. हल्दी की सुदर्शन किस्म

इस किस्म की खूबसूरती और उत्पादन क्षमता इसे विशेष बनाती है।

- उत्पादन क्षमता: प्रति एकड़ 110 से 115 क्विंटल।
- पकने की अवधि: 190 दिन (अन्य किस्मों से जल्दी तैयार)।
- विशेषता: इसके कंद छोटे लेकिन सुंदर और आकर्षक आकार के होते हैं।
- लाभ: जल्दी तैयार होने के कारण किसान समय पर फसल बेच सकते हैं और अगली फसल की तैयारी भी कर सकते हैं।

5. हल्दी की आरएच-5 किस्म

यह किस्म हल्दी की सबसे ज्यादा उत्पादन देने वाली किस्मों में से एक है।

- **पौधे की ऊँचाई:** 80 से 100 सेंटीमीटर।
- **उत्पान क्षमता:** प्रति एकड़ 200 से 220 क्विंटल।
- **पकने की अवधि:** 210 से 220 दिन।
- **विशेषता:** यह किस्म बड़े पैमाने पर व्यावसायिक खेती के लिए उपयुक्त है।
- **लाभ:** इसकी उपज क्षमता अधिक होने के कारण किसानों को अधिक लाभ मिलता है।

हल्दी की बुवाई का तरीका

हल्दी की अच्छी पैदावार के लिए सही बुवाई तकनीक का चुनाव बेहद जरूरी है। इसके लिए दो प्रमुख विधियां अपनाई जाती हैं:

1. समतल विधि

सबसे पहले खेत की गहरी जुताई करके उसे समतल कर लिया जाता है। पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी और कंद से कंद की दूरी 20 सेमी रखी जाती है। इस विधि से बुवाई आसान होती है और निराई-गुड़ाई में सुविधा रहती है।

2. मेढ़ विधि

इस विधि में दो प्रकार की पंक्ति प्रणाली अपनाई जाती है:

एकल पंक्ति विधि: 30 सेमी चौड़ी मेढ़ पर 20 सेमी की दूरी पर कंद लगाते हैं और ऊपर से 40 सेमी मिट्टी चढ़ाते हैं। दो पंक्ति विधि: 50 सेमी चौड़ी मेढ़ पर दो पंक्तियाँ बनाई जाती हैं, जिनमें पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 सेमी और कंद से कंद की दूरी 20 सेमी होती है। इसमें 60 सेमी मिट्टी चढ़ाई जाती है।

हल्दी की बुवाई का सही तरीका

बुवाई के लिए 30 से 35 ग्राम के स्वस्थ और रोगमुक्त कंद चुनने चाहिए। कंदों को 5–6 सेमी गहराई पर लगाया जाता है। रोपण से पहले कंदों को इंडोफिल एम-45 (2.5 ग्राम) और वेभिस्टीन (1 ग्राम) प्रति लीटर पानी के घोल में 30–45 मिनट तक उपचारित करना चाहिए। इससे फसल को रोगों से बचाव मिलता है और अंकुरण बेहतर होता है। हल्दी की खेती किसानों के लिए बेहतर आय का साधन है। सिम पीतांबर, सुंगधम, सोरमा, सुदर्शन

और आरएच-5 जैसी उन्नत किस्मों को अपनाकर किसान कम समय में अधिक उत्पादन कर सकते हैं। इसके अलावा हल्दी की बाजार में हमेशा डिमांड रहती है, जिससे इसकी बिक्री में किसानों को नुकसान की आशंका बहुत कम होती है। सही किस्म का चुनाव और उचित बुवाई तकनीक अपनाने से किसान अपनी आमदनी दोगुनी तक कर सकते हैं।

रिटेल ट्रैक्टर सेल्स रिपोर्ट जनवरी 2026: बिक्री में 22.90% की जोरदार बढ़ोतरी

फेडरेशन ऑफ ऑटोमोबाइल डीलर्स एसोसिएशंस (FADA) ने जनवरी 2026 की रिटेल सेल्स रिपोर्ट जारी कर दी है, जिसमें ट्रैक्टर सेगमेंट में मजबूत वृद्धि देखने को मिली है। जनवरी 2026 के दौरान देशभर में कुल 1,14,759 ट्रैक्टरों की खुदरा बिक्री दर्ज की गई, जबकि जनवरी 2025 में यह आंकड़ा 93,386 यूनिट था। इस प्रकार साल-दर-साल आधार पर ट्रैक्टर रिटेल बिक्री में 22.90% की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की गई है। यह आंकड़ा दर्शाता है कि कृषि क्षेत्र में मांग मजबूत बनी हुई है और किसान आधुनिक ट्रैक्टरों की ओर तेजी से रुख कर रहे हैं। हालांकि अधिकांश प्रमुख ब्रांड्स ने अपनी बिक्री में वृद्धि दर्ज की, लेकिन बाजार हिस्सेदारी (मार्केट शेयर) में कुछ कंपनियों को बढ़त मिली तो कुछ को मामूली गिरावट का सामना करना पड़ा।

FADA ब्रांड-वाइज ट्रैक्टर परफॉर्मेंस- जनवरी 2026

महिंद्रा एंड महिंद्रा ट्रैक्टर कंपनी

महिंद्रा एंड महिंद्र ट्रैक्टर कंपनी ने जनवरी 2026 में 26,006 ट्रैक्टरों की बिक्री की, जबकि जनवरी 2025 में यह संख्या 22,073 यूनिट थी। कंपनी ने 17.82% की सालाना वृद्धि दर्ज की है, जो कि सकारात्मक संकेत है। हालांकि कुल बिक्री बढ़ने के बावजूद कंपनी का मार्केट शेयर 23.64% (जनवरी 2025) से घटकर 22.66% (जनवरी 2026) रह गया। यानी बाजार हिस्सेदारी में 0.98% की गिरावट दर्ज की गई। इसका मतलब है कि कंपनी की बिक्री बढ़ी जरूर है, लेकिन कुल बाजार की तुलना में अन्य ब्रांड्स की वृद्धि दर अधिक रही।

स्वराज ट्रैक्टर कंपनी

स्वराज डिवीजन ने जनवरी 2026 में शानदार प्रदर्शन किया। कंपनी की बिक्री 17,341 यूनिट से बढ़कर 21,920 यूनिट हो गई, जो 26.41% की मजबूत वृद्धि दर्शाती है। इसके साथ ही कंपनी का मार्केट शेयर भी 18.57% से बढ़कर 19.10% हो गया। साल-दर-साल आधार पर 0.53% की हिस्सेदारी बढ़त बताती है कि स्वराज ब्रांड किसानों के बीच अपनी पकड़ मजबूत कर रहा है।

सोनालिका ट्रैक्टर कंपनी

सोनालिका ट्रैक्टर कंपनी ने जनवरी 2026 में 15,379 ट्रैक्टरों की बिक्री की, जबकि पिछले वर्ष इसी महीने यह आंकड़ा 12,296 (जनवरी 2025) यूनिट था। कंपनी ने 25.07% की प्रभावशाली वृद्धि दर्ज की है। मार्केट शेयर भी 13.17% (जनवरी 2026) से बढ़कर 13.40% (जनवरी 2026) हो गया, जो 0.23% की बढ़त को दर्शाता है। यह संकेत देता है कि ब्रांड की मांग लगातार बढ़ रही है

TAFE लिमिटेड ट्रैक्टर कंपनी

TAFE लिमिटेड ने जनवरी 2026 में 13,459 ट्रैक्टर बेचे, जबकि जनवरी 2025 में 10,843 यूनिट की बिक्री हुई थी। कंपनी ने 24.13% (जनवरी 2026) की सालाना वृद्धि दर्ज की है। बाजार हिस्सेदारी 11.61% से बढ़कर 11.73% हो गई, जो 0.12% की हल्की लेकिन सकारात्मक वृद्धि को दर्शाती है।

एस्कॉर्ट्स कुबोटा लिमिटेड ट्रैक्टर कंपनी

एस्कॉर्ट्स कुबोटा ने जनवरी 2026 में सबसे मजबूत प्रदर्शन करने वाले ब्रांड्स में अपनी जगह बनाई। कंपनी की बिक्री 9,133 (जनवरी 2025) यूनिट से बढ़कर 12,313 (जनवरी 2026) यूनिट हो गई, जो 34.82% की जबरदस्त वृद्धि है। मार्केट शेयर भी 9.78% से बढ़कर 10.73% (जनवरी 2026) हो गया, यानी 0.95% की उल्लेखनीय बढ़त दर्ज की गई। यह दर्शाता है कि कंपनी की बाजार में स्थिति लगातार मजबूत हो रही है।

जॉन डियर ट्रैक्टर कंपनी

जॉन डियर इंडिया ने जनवरी 2026 में 8,082 ट्रैक्टरों की बिक्री की, जबकि पिछले वर्ष यह संख्या 6,614 यूनिट थी। कंपनी ने 22.20% की वृद्धि दर्ज की है। हालांकि मार्केट शेयर 7.08% से घटकर 7.04% रह गया, जो 0.04% की मामूली गिरावट दर्शाता है। बिक्री बढ़ने के बावजूद कंपनी की बाजार हिस्सेदारी लगभग स्थिर रही।

आयशर ट्रैक्टर कंपनी

आयशर ट्रैक्टर्स ने जनवरी 2026 में 7,815 यूनिट की बिक्री दर्ज की, जबकि जनवरी 2025 में 5,957 ट्रैक्टर बेचे गए थे। कंपनी ने 31.19% की मजबूत वृद्धि हासिल की। मार्केट शेयर 6.38% से बढ़कर 6.81% हो गया, जो 0.43% की बढ़त को दर्शाता है। यह प्रदर्शन कंपनी के लिए उत्साहजनक है।

न्यू हॉलैंड ट्रैक्टर कंपनी

न्यू हॉलैंड (CNH इंडस्ट्रियल) ने जनवरी 2026 में 5,387 ट्रैक्टरों की बिक्री की, जबकि पिछले वर्ष यह संख्या 4,009 यूनिट थी। कंपनी ने 34.37% की मजबूत सालाना वृद्धि दर्ज की। मार्केट शेयर 4.29% से बढ़कर 4.69% हो गया, जो 0.40% की बढ़त दर्शाता है। यह संकेत है कि न्यू हॉलैंड की मांग बाजार में तेजी से बढ़ रही है।

अन्य कंपनियों का प्रदर्शन

अन्य श्रेणी में आने वाले ब्रांड्स को जनवरी 2026 में गिरावट का सामना करना पड़ा। बिक्री 5,120 यूनिट से घटकर जनवरी 2026 में 4,398 यूनिट रह गई, जो 14.10% की कमी को दर्शाती है। मार्केट शेयर 5.48% से गिरकर 3.83% हो गया, यानी 1.65% की बड़ी गिरावट दर्ज की गई। इससे स्पष्ट है कि किसान अब प्रमुख और स्थापित ब्रांड्स की ओर अधिक झुकाव दिखा रहे हैं।

कुल बाजार परिदृश्य

जनवरी 2026 की FADA रिपोर्ट यह स्पष्ट करती है कि ट्रैक्टर बाजार में मजबूत मांग बनी हुई है। कुल बिक्री में 22.90% की वृद्धि दर्शाती है कि कृषि क्षेत्र में निवेश बढ़ रहा है और किसान आधुनिक मशीनरी को प्राथमिकता दे रहे हैं। एस्कॉर्ट्स कुबोटा, न्यू हॉलैंड, आयशर, स्वराज, इंटरनेशनल ट्रैक्टर्स और TAFE जैसे ब्रांड्स ने न केवल अच्छी बिक्री दर्ज की बल्कि बाजार हिस्सेदारी भी बढ़ाई। वहीं महिंद्रा ट्रैक्टर्स और जॉन डियर की बिक्री में वृद्धि हुई, लेकिन उनकी हिस्सेदारी में हल्की गिरावट देखने को मिली। कुल मिलाकर, यह रिपोर्ट बताती है कि भारतीय ट्रैक्टर बाजार में प्रतिस्पर्धा तेज हो रही है और ग्राहक अब विश्वसनीय, उन्नत तकनीक वाले और बेहतर माइलेज देने वाले ब्रांड्स की ओर तेजी से आकर्षित हो रहे हैं। आने वाले महीनों में यदि कृषि क्षेत्र में सकारात्मक परिस्थितियां बनी रहती हैं, तो ट्रैक्टर बिक्री में यह मजबूती आगे भी जारी रह सकती है।

स्वराज 735 एक्स टी: 42 एचपी श्रेणी में एक दमदार ट्रैक्टर

स्वराज 735 एक्स टी: जानें, ट्रैक्टर की कीमत और फीचर्स

स्वराज 735 एक्स टी भारतीय किसानों के बीच एक लोकप्रिय और भरोसेमंद 42 एचपी श्रेणी का ट्रैक्टर है। यह ट्रैक्टर खास तौर पर मध्यम जोत वाले किसानों के लिए डिजाइन किया गया है, जो जुताई, बुवाई, ढुलाई, रोटावेटर, कल्टीवेटर और अन्य कृषि कार्यों के लिए एक शक्तिशाली और किफायती मशीन की तलाश में रहते हैं। स्वराज कंपनी अपने मजबूत निर्माण, कम रखरखाव लागत और बेहतर माइलेज के लिए जानी जाती है, और 735 एक्स टी उसी परंपरा को आगे बढ़ाता है।

स्वराज 735 एक्स टी इंजन: दमदार पावर और बेहतर ईंधन दक्षता

स्वराज 735 एक्स टी में 3 सिलेंडर वाला 3307.2 सीसी क्षमता का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 2000 आरपीएम पर 42 हॉर्सपावर की अधिकतम शक्ति उत्पन्न करता है। यह इंजन खेतों में भारी कार्यों को आसानी से संभालने में सक्षम है। इसमें 3 स्टेज ऑयल बाथ टाइप एयर फिल्टर दिया गया है, जो धूल भरे वातावरण में भी इंजन को सुरक्षित रखता है और लंबी उम्र सुनिश्चित करता है। इस ट्रैक्टर का पीटीओ पावर 32.6 एचपी है, जिससे थ्रेशर, रोटावेटर, स्प्रेयर जैसे उपकरण आसानी से चलाए जा सकते हैं। वाटर कूल्ड कूलिंग सिस्टम इंजन को अधिक गर्म होने से बचाता है, जिससे लगातार लंबे समय तक काम करने में कोई परेशानी नहीं होती।

स्वराज 735 एक्स टी ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स: स्मूद ड्राइविंग का अनुभव

स्वराज 735 एक्स टी में सिंगल या ड्यूल क्लच का विकल्प मिलता है, जिससे किसान अपनी जरूरत के अनुसार चयन कर सकते हैं। इसमें स्लाइडिंग मेश / PCM (पार्शियल कांस्टेंट मेश) ट्रांसमिशन दिया गया है, जो गियर शिफ्टिंग को आसान बनाता है। इस ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर का गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे अलग-अलग कार्यों के लिए सही स्पीड का चयन किया जा सकता है। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 2.2 से 28.5 किमी/घंटा और रिवर्स स्पीड 2.70 से 10.50 किमी/घंटा तक है। इसमें 12 वोल्ट 80 Ah बैटरी और स्टार्टर मोटर के साथ अल्टरनेटर दिया गया है, जिससे ट्रैक्टर स्टार्ट

करने में आसानी होती है।

स्वराज 735 एक्स टी ब्रेक और स्टीयरिंग: बेहतर नियंत्रण और सुरक्षा

स्वराज 735 एक्स टी में आयल इम्मरसेड ब्रेक दिए गए हैं, जो बेहतर ग्रिप और लंबी आयु प्रदान करते हैं। ये ब्रेक कम घिसते हैं और कम मेंटेनेंस की आवश्यकता होती है। स्टीयरिंग में पावर या मैकेनिकल स्टीयरिंग (वैकल्पिक) का विकल्प मिलता है। पावर स्टीयरिंग के साथ ट्रैक्टर चलाना ज्यादा आसान हो जाता है, खासकर लंबी दूरी या भारी उपकरणों के साथ काम करते समय। सिंगल ड्रॉप आर्म स्टीयरिंग एडजस्टमेंट बेहतर कंट्रोल देता है।

स्वराज 735 एक्स टी पीटीओ (Power Take Off): बहुउपयोगी कार्यों के लिए उपयुक्त

इस ट्रैक्टर में 6 स्प्लाइन पीटीओ दिया गया है, जो 540 आरपीएम पर काम करता है। 32.6 एचपी पीटीओ पावर के साथ यह ट्रैक्टर विभिन्न कृषि यंत्रों को आसानी से चला सकता है। इससे थ्रेशिंग, कटाई, स्प्रेइंग और अन्य मशीनरी कार्यों में बेहतर प्रदर्शन मिलता है।

स्वराज 735 एक्स टी फ्यूल टैंक क्षमता: लंबे समय तक बिना रुकावट काम

स्वराज 735 एक्स टी में 45 लीटर का बड़ा फ्यूल टैंक दिया गया है, जिससे किसान लंबे समय तक खेत में बिना बार-बार डीजल भरवाए काम कर सकते हैं। यह विशेषता बड़े खेतों के लिए काफी उपयोगी साबित होती है।

स्वराज 735 एक्स टी डायमेंशन और वजन: संतुलन और मजबूती का मेल

इस ट्रैक्टर का कुल वजन 1905 किलोग्राम है, जो इसे खेत में बेहतर पकड़ और स्थिरता प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस 2090 मिमी, ओवरऑल लंबाई 3450 मिमी और चौड़ाई 1780 मिमी है। 385 मिमी का ग्राउंड क्लीयरेंस इसे ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी आसानी से चलने योग्य बनाता है।

स्वराज 735 एक्स टी हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग कैपेसिटी: भारी उपकरणों के लिए सक्षम

स्वराज 735 एक्स टी की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1650 किलोग्राम है, जो इसे रोटावेटर, एमबी प्लाऊ, कल्टीवेटर और सीड ड्रिल जैसे भारी उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाती है। इसमें ADDC (Automatic Depth & Draft Control) हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है, जो उपकरणों की गहराई को स्वतः नियंत्रित करता है। यह Cat- I और Cat- II दोनों श्रेणी के उपकरणों के साथ काम कर सकता है।

स्वराज 735 एक्स टी टायर साइज: बेहतर ट्रैक्शन और पकड़

इस ट्रैक्टर में आगे की ओर 6.00 x 16 और पीछे की ओर 13.6 x 28 साइज के टायर दिए गए हैं। बड़े रियर टायर खेत में मजबूत पकड़ और बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करते हैं, जिससे ट्रैक्टर फिसलन वाली जमीन में भी बेहतर प्रदर्शन करता है।

स्वराज 735 एक्स टी कीमत और वारंटी?

स्वराज 735 एक्स टी ट्रैक्टर की कीमत ₹ 6.38 लाख से ₹ 6.65 लाख के बीच है। स्वराज 735 एक्स टी के साथ कंपनी 6000 घंटे या 6 साल की वारंटी प्रदान करती है (जो भी पहले पूरा हो)। यह लंबी वारंटी किसानों को मानसिक संतोष देती है और ट्रैक्टर की विश्वसनीयता को दर्शाती है। स्वराज 735 एक्स टी एक मजबूत, भरोसेमंद और बहुउपयोगी 42 एचपी ट्रैक्टर है, जो खेती के लगभग सभी कार्यों को आसानी से संभाल सकता है। बेहतर इंजन पावर, मजबूत हाइड्रोलिक्स, ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स और लंबी

असली ताक़त
बेजोड़ काम
ज़बरदस्त कमाई
EICHER 485
45 HP रेंज

वारंटी जैसी खूबियों के कारण यह ट्रैक्टर मध्यम किसानों के लिए एक उत्कृष्ट विकल्प साबित होता है। यदि आप एक ऐसे ट्रैक्टर की तलाश में हैं जो पावर, परफॉर्मेंस और किफायत का संतुलन प्रदान करे, तो स्वराज 735 एक्स टी आपके लिए सही चुनाव हो सकता है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710: 47 एचपी श्रेणी में एक दमदार ट्रैक्टर

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 ट्रैक्टर के फीचर्स, स्पेसिफिकेशन और कीमत

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 एक 47 एचपी श्रेणी का शक्तिशाली और उन्नत तकनीक से लैस ट्रैक्टर है, जिसे विशेष रूप से मध्यम और बड़े किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए डिजाइन किया गया है। यह ट्रैक्टर खेती के लगभग सभी कार्यों—जुताई, बुवाई, ढुलाई, रोटावेशन, स्प्रेइंग और फसल कटाई—में उत्कृष्ट प्रदर्शन करता है। मजबूत बॉडी, उच्च ग्राउंड क्लीयरेंस और संतुलित वजन के कारण यह ट्रैक्टर कठिन और असमतल खेतों में भी बेहतरीन स्थिरता प्रदान करता है। आधुनिक फीचर्स, लंबी वारंटी और भरोसेमंद इंजन क्षमता इसे 47 एचपी श्रेणी में एक लोकप्रिय और विश्वसनीय विकल्प बनाते हैं।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 इंजन क्षमता और प्रदर्शन

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 में 3-सिलेंडर, 2931 सीसी क्षमता का शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जो 47 HP की अधिकतम पावर उत्पन्न करता है। यह इंजन 2100 रेटेड आरपीएम पर कार्य करता है और 168 एनएम का अधिकतम टॉर्क प्रदान करता है, जिससे ट्रैक्टर भारी कृषि कार्यों के दौरान भी दमदार प्रदर्शन देता है। इसका इंजन वाटर कूल्ड सिस्टम से लैस है, जो लंबे समय तक निरंतर कार्य करने के दौरान इंजन को ओवरहीट होने से बचाता है। इसके साथ ड्राई एयर क्लीनर क्लॉगिंग सेंसर दिया गया है, जो इंजन में साफ हवा पहुंचाता है और फिल्टर जाम होने पर संकेत देकर इंजन की सुरक्षा सुनिश्चित करता है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 ट्रांसमिशन और गियरबॉक्स प्रणाली

इस ट्रैक्टर में कांस्टेंट मेश AFD साइड शिफ्ट ट्रांसमिशन दिया गया है, जिससे गियर शिफ्टिंग बेहद स्मूथ और आसान हो जाती है। इसमें ड्यूल क्लच with IPTO Lever की सुविधा दी गई है, जिससे PTO और ट्रैक्टर संचालन को स्वतंत्र रूप से नियंत्रित किया जा सकता है। यह सुविधा विशेष रूप से उन किसानों के लिए उपयोगी है जो PTO आधारित उपकरणों का अधिक उपयोग करते हैं। गियर विकल्पों में 8 फॉरवर्ड + 2 रिवर्स, 8 फॉरवर्ड + 8 रिवर्स, 16 फॉरवर्ड + 4 रिवर्स तथा 16 फॉरवर्ड + 16 रिवर्स शामिल हैं, जिससे किसान अपनी आवश्यकता के अनुसार उपयुक्त विकल्प चुन सकते हैं। इसकी फॉरवर्ड स्पीड 3.0 से 33.24 किमी/घंटा तक तथा रिवर्स स्पीड 3.10 से 34.36 किमी/घंटा तक उपलब्ध है, जिससे यह खेत और सड़क दोनों पर बेहतर प्रदर्शन करता है। 88 Ah की बैटरी और 35 Amp का अल्टरनेटर ट्रैक्टर की विद्युत प्रणाली को स्थिर और विश्वसनीय

बनाए रखते हैं।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 ब्रेक और स्टीयरिंग सिस्टम

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 में तेल में डूबे मल्टी डिस्क ब्रेक्स दिए गए हैं, जो बेहतर ग्रिप, कम घिसावट और अधिक सुरक्षा प्रदान करते हैं। यह ब्रेकिंग सिस्टम लंबे समय तक टिकाऊ रहता है और फिसलन भरे खेतों में भी प्रभावी नियंत्रण देता है। स्टीयरिंग में पावर स्टीयरिंग की सुविधा दी गई है, जिससे ऑपरेटर को कम मेहनत में सटीक नियंत्रण मिलता है। लंबी अवधि तक कार्य करने के दौरान भी चालक को कम थकान महसूस होती है, जिससे उत्पादकता में वृद्धि होती है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 पावर टेक-ऑफ (पीटीओ) फीचर्स

इस ट्रैक्टर की पीटीओ पावर 42.5 HP है, जो रोटावेटर, थ्रेशर, रीपर, स्ट्रॉ रीपर और अन्य भारी उपकरणों को सुचारू रूप से चलाने में सक्षम बनाती है। मजबूत इंजन और उच्च टॉर्क क्षमता के कारण यह ट्रैक्टर ईंधन दक्षता के साथ बेहतरीन आउटपुट देता है। इस ट्रैक्टर में रिवर्स पीटीओ और GSPTO का विकल्प मिलता है। यह 540S और 540E पीटीओ आरपीएम पर कार्य करता है, जिससे अलग-अलग कृषि उपकरणों के अनुसार स्पीड का चयन किया जा सकता है। IPTO लीवर की सुविधा इसे और अधिक उपयोगी बनाती है, क्योंकि इससे PTO संचालन को स्वतंत्र रूप से नियंत्रित किया जा सकता है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 फ्यूल टैंक क्षमता

New Holland Excel 4710 में 60 लीटर की बड़ी फ्यूल टैंक क्षमता दी गई है, जिससे ट्रैक्टर लंबे समय तक बिना रुके कार्य कर सकता है। यह सुविधा विशेष रूप से बड़े खेतों में काम करने वाले किसानों के लिए लाभदायक है, क्योंकि इससे बार-बार डीजल भरवाने की आवश्यकता कम हो जाती है और समय की बचत होती है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 डायमेंशन और वजन

इस ट्रैक्टर का कुल वजन 2010 किलोग्राम है, जो इसे खेत में बेहतर संतुलन और स्थिरता प्रदान करता है। इसका व्हीलबेस 2104 मिमी, कुल लंबाई 3515 मिमी, चौड़ाई 2080 मिमी और ग्राउंड क्लीयरेंस 435 मिमी है। ये डायमेंशन इसे ऊबड़-खाबड़ और गीली मिट्टी वाले खेतों में भी प्रभावी बनाते हैं। उच्च ग्राउंड क्लीयरेंस फसल को नुकसान से बचाता है और ट्रैक्टर को बेहतर मूवमेंट प्रदान करता है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

New Holland Excel 4710 की लिफ्टिंग कैपेसिटी 1800 किलोग्राम है, जिससे यह भारी कृषि उपकरणों को आसानी से उठाने और संचालित करने में सक्षम है। इसमें केटेगरी I & II हाइड्रोलिक्स लिंक और आटोमेटिक डेप्थ & ड्राफ्ट कण्ट्रोल सिस्टम दिया गया है, जो खेत में गहराई और संतुलन को सटीक रूप से नियंत्रित करता है। यह सुविधा जुताई और रोटावेशन जैसे कार्यों में विशेष रूप से लाभदायक साबित होती है।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 टायर साइज और वारंटी

इस ट्रैक्टर में फ्रंट टायर 6.50 x 16 और रियर टायर 14.9 x 28 साइज के दिए गए हैं, जो खेत में मजबूत पकड़ और बेहतर ट्रैक्शन प्रदान करते हैं। बड़े और मजबूत टायर ट्रैक्टर की स्थिरता और प्रदर्शन को और अधिक प्रभावी बनाते हैं।

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 ट्रैक्टर की कीमत?

न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 ट्रैक्टर की कीमत ₹ 7.89 लाख से ₹ 8.21 लाख के बीच है। कंपनी इस मॉडल पर 6000 घंटे या 6 वर्ष (जो पहले हो) की लंबी वारंटी प्रदान करती है, जो इसकी गुणवत्ता और

विश्वसनीयता का प्रमाण है। न्यू हॉलैंड एक्सेल 4710 एक शक्तिशाली, टिकाऊ और आधुनिक तकनीक से लैस ट्रैक्टर है, जो 47 HP श्रेणी में बेहतरीन विकल्प माना जाता है। मजबूत इंजन, उच्च टॉर्क, एडवांस ट्रांसमिशन, प्रभावी ब्रेकिंग सिस्टम और 1800 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता इसे हर प्रकार की खेती के लिए उपयुक्त बनाती है। मध्यम और बड़े किसान, जो एक भरोसेमंद और लंबे समय तक चलने वाला ट्रैक्टर चाहते हैं, उनके लिए यह मॉडल एक लाभदायक और सुरक्षित निवेश साबित हो सकता है।

मलकित के टॉप 3 कंबाइन हार्वेस्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

मलकित 897, मलकित 997 और मलकित 997 डीलक्स की जानकारी

भारतीय बाजार में मलकित एक बेहतरीन और सर्वव्यापी कटाई इम्प्लीमेंट ब्रांड है, जिसका इस्तेमाल विभिन्न फसलों को काटने के लिए किया जाता है। देश में किसानों को सबसे ज्यादा मशीनरी का इस्तेमाल खाना पूर्ती के लिए किया जाता है। मलकित कंबाइन हार्वेस्टर का इस्तेमाल मल्टीक्रॉप कटाई के लिए किया जाता है।इसका सबसे ज्यादा उपयोग भारत में किया जाता है। अधिकांश भारतीय किसान मलकीरत पर काफी भरोसा करते हैं। इसलिए आज हम आपको मेरीखेती के इस लेख में मलकित ब्रांड के 3 सबसे महत्वपूर्ण कंबाइन हार्वेस्टर कृषि यंत्रों के बारे में जानकारी प्रदान करने वाले हैं। इस लेख में आज हम मलकित 897, मलकित 997 और मलकित 997 डीलक्स के बारे में चर्चा करेंगे।

मलकित 897

- किसान साथियों, मलकित 897 एक शक्तिशाली और आधुनिक कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे भारतीय खेतों की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया है। यह मशीन गेहूँ, धान, सोयाबीन, मक्का और चावल जैसी कई फसलों की कटाई, मड़ाई और सफाई एक साथ करने में सक्षम है।
- मलकित 897 में 101 HP का Ashok Leyland इंजन दिया गया है, जो 2200 RPM पर स्थिर और दमदार प्रदर्शन प्रदान करता है। 5 स्ट्रॉ वॉकर तकनीक अनाज और भूसे को बेहतर तरीके से अलग करती है, जिससे अनाज की हानि कम होती है और सफाई बेहतर मिलती है।
- 4640 mm वर्किंग चौड़ाई और 4340 mm प्रभावी कटिंग चौड़ाई के कारण यह कम समय में अधिक क्षेत्र की कटाई कर सकती है, जिससे ईंधन और समय दोनों की बचत होती है।

मलकित 997

- मलकित 997 मॉडल भी मजबूत निर्माण और उच्च कार्य क्षमता के लिए जाना जाता है। इसमें 51 इंच का मजबूत चेसिस, बड़े आकार के टायर और संतुलित डिजाइन दिया गया है, जिससे मशीन गीली या नरम मिट्टी में भी आसानी से काम कर सकती है।

- 1975 किलोग्राम क्षमता वाला ग्रेन टैंक बार-बार अनाज खाली करने की जरूरत को कम करता है, जबकि 380 लीटर का डीजल टैंक लंबे समय तक लगातार काम करने में मदद करता है।
- 20 लीटर क्षमता वाला हाइड्रोलिक सिस्टम मशीन के संचालन को स्मूद और नियंत्रित बनाता है। यह हार्वेस्टर गेहूँ की फसल में लगभग 3–4 एकड़ प्रति घंटे की कार्य क्षमता देता है, जिससे मजदूरी लागत कम होती है और समय पर कटाई संभव होती है।

मलकित 997 डीलक्स

- मलकित 997 डीलक्स मॉडल 101 एचपी की ताकत के साथ आता है, जो कि 897 और 997 का मिश्रित संयोजन माना जाता है, जिसमें समान इंजन और कटिंग सिस्टम के साथ ऑपरेटर आराम और सुविधा पर विशेष ध्यान दिया गया है।
- लंबी अवधि तक काम करने के लिए बेहतर कंट्रोल, आरामदायक ऑपरेटिंग सिस्टम और स्थिर डिजाइन इसे बड़े किसानों और कस्टम हायरिंग व्यवसाय के लिए उपयुक्त बनाते हैं।
- यही वजह है, कि मलकित बहुत तेजी के साथ किसानो के बीच लोकप्रिय हो रहा है। इसमें आपको मजबूत और टिकाऊ डिजाइन विश्वसनीय स्टीयरिंग, ईंधन की बचत के लिए बड़ा टैंक, गेहूं, चावल, मक्का, सोयाबीन इत्यादि के लिए उपयुक्त है।

ये तीनो कृषि यंत्र लगभग ₹18 लाख से ₹26.10 लाख की कीमत के बीच यह मशीन एक दीर्घकालिक निवेश साबित हो सकती है, क्योंकि इसकी मल्टी-क्रॉप क्षमता, मजबूत प्रदर्शन और उच्च उत्पादकता खेती को अधिक लाभदायक और आधुनिक बनाती है।

मैक्सग्रीन नंदी-25: 25 एचपी श्रेणी में बेहतरीन मिनी इलेक्ट्रिक ट्रैक्टर

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर – बागवानी के लिए बना खास साथी

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर एक कॉम्पैक्ट और उपयोगी ट्रैक्टर है, जिसे कंपनी ने विशेष रूप से बागवानी और फलों के बागों में काम करने के उद्देश्य से तैयार किया है। इसका डिज़ाइन ऐसा रखा गया है कि यह संकरी कतारों, छोटे रास्तों और पेड़ों के बीच आसानी से चल सके। छोटे और मध्यम बागवानी किसानों के लिए यह ट्रैक्टर काम को आसान, तेज और अधिक किफायती बनाता है। इस लेख के माध्यम से आप मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर ट्रैक्टर की पूरी जानकारी सरल शब्दों में समझ सकते हैं।

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर की इंजन पावर और परफॉर्मेंस

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर में आपको 25 हॉर्सपावर (HP) का इंजन मिलता है, जिसकी क्यूबिक कैपेसिटी 1318 सीसी है। यह इंजन बागवानी से जुड़े हल्के से मध्यम कृषि कार्यों के लिए उपयुक्त

शक्ति प्रदान करता है। ट्रैक्टर का इंजन अधिकतम 82 Nm का टॉर्क जनरेट करता है, जिससे कम गति पर भी अच्छा खिंचाव मिलता है। इसमें ड्राई टाइप एयर क्लीनर दिया गया है, जो Clogging Sensor के साथ आता है, जिससे एयर फिल्टर के जाम होने की जानकारी समय पर मिल जाती है और इंजन की सुरक्षा बनी रहती है। ट्रैक्टर में सिंगल डायाफ्राम क्लच दिया गया है, जो स्मूद ऑपरेशन और बेहतर नियंत्रण में मदद करता है।

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर गियरबॉक्स, स्पीड और ड्राइविंग कंट्रोल

अगर मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर के गियर सिस्टम की बात करें, तो इसमें 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर दिए गए हैं। यह गियर कॉम्बिनेशन खेत के अलग-अलग कार्यों के लिए उपयुक्त स्पीड चुनने में मदद करता है। ट्रैक्टर की अधिकतम फॉरवर्ड स्पीड लगभग 26 किलोमीटर प्रति घंटा है, जो बागवानी कार्यों और हल्के ट्रांसपोर्ट के लिए पर्याप्त मानी जाती है। बेहतर सुरक्षा और नियंत्रण के लिए इसमें तेल में डूबे हुए ब्रेक दिए गए हैं। साथ ही, ट्रैक्टर में पावर स्टीयरिंग मिलती है, जिससे कम जगह में मोड़ना आसान हो जाता है और लंबे समय तक काम करने पर थकान भी कम महसूस होती है।

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर पीटीओ, हाइड्रोलिक्स और लिफ्टिंग क्षमता

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर ट्रैक्टर में 540 RPM क्षमता वाला PTO दिया गया है, जिससे स्प्रे पंप, रोटरी स्लैशर और अन्य PTO आधारित उपकरण आसानी से चलाए जा सकते हैं। ट्रैक्टर की हाइड्रोलिक लिफ्टिंग कैपेसिटी 1000 किलोग्राम है, जो बागवानी उपकरणों के लिए पर्याप्त मानी जाती है। इसमें ऑटोमैटिक ड्राफ्ट कंट्रोल सिस्टम भी दिया गया है, जिससे खेत में काम करते समय उपकरण की गहराई और संतुलन बना रहता है।

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर टायर, आयाम और स्थिरता

ट्रैक्टर के टायरों की बात करें तो इसमें आगे की तरफ 5 x 12 साइज के फ्रंट टायर और पीछे की तरफ 8 x 20 साइज के रियर टायर दिए गए हैं। ये टायर नैरो ट्रैक के साथ आते हैं, जिससे ट्रैक्टर संकरी जगहों और बागों में आसानी से चल पाता है। मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर का टर्निंग रेडियस लगभग 2.4 मीटर है, जो इसे छोटे खेतों और बागों के लिए बेहद उपयोगी बनाता है। ट्रैक्टर का कुल वजन करीब 850 किलोग्राम है, जिससे यह हल्का होने के साथ-साथ संतुलित भी रहता है। इसका व्हीलबेस 1500 मिमी, चौड़ाई लगभग 1040 मिमी और कुल ऊंचाई करीब 1950 मिमी (लो-प्रोफाइल डिजाइन) है, जो इसे पेड़ों के नीचे और कम ऊंचाई वाले क्षेत्रों में भी आसानी से चलने लायक बनाती है।

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर ट्रैक्टर की कीमत?

मैक्सग्रीन नंदी-25 ट्रैक्टर की कीमत ₹ 5.22 से ₹ 5.44 लाख तक है। इस ट्रैक्टर की कीमत किसानों के बजट को ध्यान में रखकर ही तय की जाएगी। कम HP श्रेणी में आधुनिक फीचर्स और बागवानी-अनुकूल डिजाइन को देखते हुए, यह ट्रैक्टर एक किफायती और उपयोगी विकल्प साबित हो सकता है।

करतार के टॉप 3 कंबाइन हार्वेस्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर

बेस्ट 3 करतार कंबाइन हार्वेस्टर - किसानों की पहली पसंद

भारत में कंबाइन हार्वेस्टर की बढ़ती मांग को देखते हुए करतार एग्रो इंडस्ट्रीज ने किसानों के लिए दमदार और भरोसेमंद मशीनों की एक मजबूत रेंज पेश की है। करतार के कंबाइन हार्वेस्टर अपनी उच्च कार्यक्षमता, मजबूत इंजन, चौड़े कटर बार और उन्नत थ्रेशिंग सिस्टम के लिए जाने जाते हैं। ये मशीनें खास तौर पर गेहूं, धान और मक्का जैसी प्रमुख फसलों की तेज और साफ कटाई के लिए डिजाइन की गई हैं, जिससे किसानों का समय, श्रम और लागत—तीनों की बचत होती है। अगर आप एक ऐसा कंबाइन हार्वेस्टर ढूंढ रहे हैं जो मजबूत, टिकाऊ और उच्च उत्पादकता वाला हो, तो करतार के ये टॉप 3 मॉडल आपके लिए बेहतर विकल्प साबित हो सकते हैं। आगे हम इन मॉडलों की कीमत, स्पेसिफिकेशन और प्रमुख फीचर्स के बारे में विस्तार से जानेंगे।

1. करतार 3500

यह कंबाइन हार्वेस्टर शक्तिशाली इंजन, चौड़े कटर बार और उन्नत थ्रेशिंग सिस्टम के साथ बड़े स्तर पर फसल कटाई के लिए तैयार किया गया है।

करतार 3500 इंजन पावर

इसमें Ashok Leyland का ALU04WD/16 मॉडल इंजन दिया गया है, जो 4 सिलेंडर के साथ 74 hp की अधिकतम शक्ति 2200 RPM पर प्रदान करता है। यह वाटर कूल्ड सिस्टम से लैस है, जिससे लंबे समय तक लगातार काम करने पर भी इंजन का तापमान नियंत्रित रहता है और मशीन की कार्यक्षमता बनी रहती है। मजबूत इंजन और संतुलित डिजाइन के कारण यह हार्वेस्टर गेहूं और धान जैसी मुख्य फसलों की कटाई में बेहतर प्रदर्शन करता है।

करतार 3500 के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

इस मशीन का कटर बार 2970 मिमी से 3124 मिमी चौड़ाई के बीच उपलब्ध है, जिससे एक बार में अधिक क्षेत्र की कटाई संभव हो पाती है। कटर की ऊंचाई को हाइड्रोलिक प्रणाली द्वारा समायोजित किया जा सकता है, जिससे 100 मिमी की न्यूनतम

और 500 मिमी की अधिकतम कटाई ऊंचाई प्राप्त होती है। यह सुविधा अलग-अलग फसल ऊंचाई और खेत की स्थिति के अनुसार कटाई को आसान बनाती है। रील “पिक अप” प्रकार की है, जिसकी स्पीड मैकेनिकल तरीके से एडजस्ट की जा सकती है तथा इसकी ऊंचाई भी हाइड्रोलिक सिस्टम से नियंत्रित होती है, जिससे फसल को सुचारू रूप से थ्रेशर ड्रम तक पहुंचाया जा सके। थ्रेशर ड्रम का व्यास 600 मिमी और लंबाई 890 मिमी है, जो प्रभावी दंवनी (थ्रेशिंग) के लिए पर्याप्त आकार प्रदान करता है। ड्रम की स्पीड 535 से 1210 RPM के बीच मैकेनिकल तरीके से समायोजित की जा सकती है, जिससे अलग-अलग फसलों के अनुसार थ्रेशिंग की तीव्रता नियंत्रित की जा सके। इसमें 8 रैस्प बार और 88 स्पाइक्स दिए गए हैं, जो अनाज को भूसे से अलग करने में मदद करते हैं। कंकैव (Concave) और थ्रेशर के बीच की क्लियरेंस 16 से 39 मिमी तथा 3 से 16 मिमी तक मैकेनिकल रूप से एडजस्ट की जा सकती है, और कंकैव में 25 स्पाइक्स लगे होते हैं, जो दानों की बेहतर सफाई सुनिश्चित करते हैं।

स्ट्रॉ वॉकर की संख्या 4 है और इनका कुल क्षेत्रफल 26232 वर्ग सेंटीमीटर है, जिससे भूसे को अच्छी तरह फैलाकर अनाज को अलग किया जाता है। क्लीनिंग एरिया 16422 वर्ग सेंटीमीटर है, जहां मैकेनिकल एडजस्टमेंट की सुविधा दी गई है। फैन में 6 ब्लेड लगे हैं, जिसका व्यास 455 मिमी और चौड़ाई 880 मिमी है। फैन की गति भी मैकेनिकल रूप से नियंत्रित की जा सकती है, जिससे अनाज की सफाई प्रभावी ढंग से की जा सके और हल्के कचरे को बाहर निकाला जा सके। ईंधन टैंक की क्षमता 125 लीटर है, जिससे लंबे समय तक बिना रुके कार्य किया जा सकता है। हाइड्रोलिक ऑयल टैंक 25 लीटर का है। मशीन में क्यूब आकार का ग्रेन टैंक दिया गया है, जो कटाई के दौरान पर्याप्त मात्रा में अनाज संग्रहित कर सकता है। आगे के टायर का साइज 16.9-28 और पीछे/ट्रॉली टायर का साइज 7.50-16 है, जो खेत में संतुलन और पकड़ प्रदान करते हैं।आकार की बात करें तो मशीन की लंबाई 7315 मिमी, चौड़ाई 3050 मिमी और ऊंचाई 3353 मिमी है। न्यूनतम ग्राउंड क्लीयरेंस 500 मिमी है, जिससे ऊबड़-खाबड़ खेतों में भी आसानी से संचालन संभव है। इसका अनुमानित वजन 6095 किलोग्राम है, जो इसे स्थिरता और मजबूती प्रदान करता है।कार्य क्षमता की दृष्टि से यह कंबाइन हार्वेस्टर गेहूं की फसल में लगभग 1.5 से 3.5 एकड़ प्रति घंटा और धान की फसल में लगभग 1.0 से 2.0 एकड़ प्रति घंटा तक कटाई करने में सक्षम है। इस प्रकार यह मशीन मध्यम से बड़े किसानों के लिए एक प्रभावी और समय बचाने वाला विकल्प सिद्ध हो सकती है, जो कम समय में अधिक क्षेत्र की कटाई करना चाहते हैं। करतार 3500 हार्वेस्टर की कीमत ₹ 18.70 लाख तक है।

2. करतार 4000

Kartar Agro Industries का Kartar 4000 (51") एक हाई-कैपेसिटी कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे बड़े खेतों और अधिक उत्पादन वाली फसलों के लिए डिज़ाइन किया गया है। यह मशीन विशेष रूप से गेहूं और धान की तेज, साफ और कम नुकसान वाली कटाई के लिए जानी जाती है। इसका मजबूत ढांचा, चौड़ा कटर बार और शक्तिशाली इंजन इसे बड़े किसानों और कस्टम हायरिंग ऑपरेटरों के लिए एक भरोसेमंद विकल्प बनाता है।

करतार 4000 के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

कटर बार की चौड़ाई 4199 मिमी है, जिससे एक बार में लगभग 14 फीट से अधिक क्षेत्र की कटाई संभव हो पाती है। कटिंग हाइट को हाइड्रोलिक सिस्टम द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जिसमें न्यूनतम 100 मिमी और अधिकतम 700 मिमी तक समायोजन की सुविधा है। यह विशेषता अलग-अलग फसल ऊंचाई और खेत की स्थिति के अनुसार सटीक कटाई सुनिश्चित करती है। रील “पिक अप” प्रकार की है, जिसकी स्पीड मैकेनिकल रूप से

एडजस्ट की जा सकती है, जबकि ऊंचाई हाइड्रोलिक सिस्टम से नियंत्रित होती है, जिससे फसल को सुचारू रूप से थ्रेशिंग यूनिट तक पहुंचाया जा सके। थ्रेशर ड्रम का व्यास 600 मिमी और लंबाई 1270 मिमी है, जो बड़े स्तर की दंवनी के लिए पर्याप्त आकार प्रदान करता है। ड्रम की गति 535 से 1210 RPM तक मैकेनिकल तरीके से समायोजित की जा सकती है। इसमें 8 रैस्प बार और 128 स्पाइक्स दिए गए हैं, जो अनाज को भूसे से अलग करने की प्रक्रिया को तेज और प्रभावी बनाते हैं। कंकैव और थ्रेशर के बीच की क्लियरेंस 16 से 39 मिमी तथा 3 से 16 मिमी तक समायोजित की जा सकती है। कंकैव में 36 स्पाइक्स दिए गए हैं, जो बेहतर दंवनी और न्यूनतम अनाज हानि सुनिश्चित करते हैं। इस मशीन में 5 स्ट्रॉ वॉकर लगाए गए हैं, जिनका कुल क्षेत्रफल 46565 वर्ग सेंटीमीटर है। यह बड़ा क्षेत्रफल भूसे को अच्छी तरह फैलाकर अनाज को अलग करने में मदद करता है। क्लीनिंग एरिया 16422 वर्ग सेंटीमीटर है, जहां मैकेनिकल एडजस्टमेंट की सुविधा उपलब्ध है। फैन में 5 ब्लेड लगे हैं, जिसका व्यास 600 मिमी और चौड़ाई 1260 मिमी है। इसकी गति को भी मैकेनिकल रूप से नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे साफ और गुणवत्ता युक्त अनाज प्राप्त होता है। फ्यूल टैंक की क्षमता 380 लीटर है, जिससे लंबे समय तक बिना रुके कटाई की जा सकती है। ग्रेन टैंक की क्षमता 2.64 क्यूबिक मीटर है, जो अधिक मात्रा में अनाज संग्रहित करने की सुविधा देता है। हाइड्रोलिक ऑयल टैंक 25 लीटर का है। आगे के टायर 18.4/15/30 साइज के हैं और पीछे के 9.00 x 16 साइज के, जो खेत में बेहतर पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। आकार की दृष्टि से इसकी लंबाई 8535 मिमी, ऊंचाई 4572 मिमी और न्यूनतम ग्राउंड क्लीयरेंस 460 मिमी है। लगभग 9150 किलोग्राम वजन के साथ यह मशीन स्थिर और मजबूत प्रदर्शन देती है। कार्य क्षमता की बात करें तो यह हार्वेस्टर गेहूं की फसल में लगभग 4.5 एकड़ प्रति घंटा और धान की फसल में लगभग 4 एकड़ प्रति घंटा तक कटाई कर सकता है। उच्च क्षमता और चौड़े कटर बार के कारण यह बड़े खेतों में समय की बचत और बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित करता है। करतार **4000** हार्वेस्टर की कीमत ₹ **21.50** लाख तक है।

3. करतार 4000 मेज़

Kartar Agro Industries द्वारा निर्मित Kartar 4000 एक हाई-पावर मल्टी-क्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे विशेष रूप से मक्का, गेहूं और धान जैसी फसलों की प्रभावी कटाई के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसकी मजबूत बॉडी, बड़ा थ्रेशिंग सिस्टम और उच्च क्षमता वाला इंजन इसे बड़े किसानों और कस्टम हायरिंग ऑपरेटरों के लिए उपयुक्त बनाता है।Kartar Agro Industries द्वारा निर्मित Kartar 4000 एक हाई-पावर मल्टी-क्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर है, जिसे विशेष रूप से मक्का, गेहूं और धान जैसी फसलों की प्रभावी कटाई के लिए डिज़ाइन किया गया है। इसकी मजबूत बॉडी, बड़ा थ्रेशिंग सिस्टम और उच्च क्षमता वाला इंजन इसे बड़े किसानों और कस्टम हायरिंग ऑपरेटरों के लिए उपयुक्त बनाता है।

करतार 4000 मेज़ इंजन पावर

इस मशीन में Ashok Leyland का H6ET1C3RD22/1 इंजन लगाया गया है, जो 101 हॉर्सपावर की ताकत 2200 RPM पर प्रदान करता है। 6 सिलेंडर वाला यह इंजन वाटर कूल्ड सिस्टम से लैस है, जिससे लंबे समय तक लगातार कार्य करने पर भी इंजन का तापमान नियंत्रित रहता है। उच्च HP के कारण यह मशीन घनी और भारी फसल में भी बेहतरीन प्रदर्शन करती है।

करतार 4000 मेज़ के फीचर्स और स्पेसिफिकेशन्स

कटर बार की चौड़ाई 3695 मिमी है, जिससे एक बार में अधिक क्षेत्र की कटाई संभव हो पाती है। कटिंग हाइट को हाइड्रोलिक सिस्टम द्वारा नियंत्रित किया जाता है, जिसमें न्यूनतम 100 मिमी और अधिकतम 700 मिमी तक समायोजन की सुविधा है। इसमें 6 पंक्तियों में

कटाई की व्यवस्था दी गई है तथा पंक्तियों के बीच 610 मिमी की दूरी रखी गई है, जो विशेष रूप से मक्का जैसी कतार वाली फसलों के लिए उपयुक्त है। थ्रेशर ड्रम का व्यास 600 मिमी और लंबाई 1270 मिमी है, जो बड़े स्तर पर दंवनी के लिए पर्याप्त आकार प्रदान करता है। ड्रम की गति 535 से 1210 RPM तक मैकेनिकली एडजस्ट की जा सकती है, जिससे विभिन्न फसलों के अनुसार थ्रेशिंग की तीव्रता नियंत्रित की जा सके। इसमें 8 बार्स दिए गए हैं, जो अनाज को भूसे से अलग करने की प्रक्रिया को प्रभावी बनाते हैं। कॉनकेव और थ्रेशर के बीच की निकासी 16 से 39 मिमी तथा 3 से 16 मिमी तक मैकेनिकली समायोजित की जा सकती है। यह सुविधा अनाज की गुणवत्ता बनाए रखने और टूट-फूट कम करने में मदद करती है। स्ट्रॉ वॉकर्स की संख्या 5 है और इनका कुल क्षेत्रफल 46565 वर्ग सेंटीमीटर है, जिससे भूसे को अच्छी तरह फैलाकर अनाज को अलग किया जाता है। क्लीनिंग एरिया 16422 वर्ग सेंटीमीटर है और इसकी एडजस्टमेंट मैकेनिकली की जा सकती है।

फैन में 5 ब्लेड दिए गए हैं, जिसका व्यास 600 मिमी और चौड़ाई 1260 मिमी है। फैन की स्पीड को भी मैकेनिकली नियंत्रित किया जा सकता है, जिससे अनाज की साफ-सफाई बेहतर तरीके से हो सके और हल्का कचरा बाहर निकल जाए। ईंधन टैंक की क्षमता 380 लीटर है, जिससे लंबे समय तक बिना रुके कटाई संभव है। अनाज टैंक की क्षमता 2.64 घन मीटर है, जो अधिक मात्रा में अनाज संग्रहित करने की सुविधा देता है। ऑयल टैंक की क्षमता 25 लीटर है। टायर साइज में आगे 18.4/15/30 और पीछे 9.00 X 16 टायर दिए गए हैं, जो खेत में मजबूत पकड़ और संतुलन प्रदान करते हैं। मशीन की लंबाई 8535 मिमी, ऊंचाई 4572 मिमी और न्यूनतम ग्राउंड क्लीयरेंस 460 मिमी है। इसका कुल वजन लगभग 9150 किलोग्राम है, जो इसे स्थिर और मजबूत बनाता है। कार्य क्षमता की दृष्टि से यह कंबाइन हार्वेस्टर मक्का की फसल में लगभग 2 एकड़ प्रति घंटे की दर से कटाई करने में सक्षम है। उच्च शक्ति, चौड़ा कटर बार और बड़ा थ्रेशिंग सिस्टम इसे मध्यम से बड़े खेतों के लिए एक कुशल और भरोसेमंद विकल्प बनाते हैं। करतार 4000 मेज़ हार्वेस्टर की कीमत ₹ 27.50 लाख तक है।

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर: 55 HP श्रेणी में बेहतरीन ट्रैक्टर

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर की खासियत

भारत की एक प्रसिद्ध ट्रैक्टर निर्माण कंपनी है। यह कंपनी किसानों के लिए मजबूत और आधुनिक ट्रैक्टर बनाती है। प्रीत ट्रैक्टर्स की स्थापना वर्ष 1980 में की गई थी। कंपनी के ट्रैक्टर अपनी ताकत, टिकाऊपन और अच्छी माइलेज के लिए जाने जाते हैं। इसके ट्रैक्टर भारत के साथ-साथ कई देशों में निर्यात भी किए जाते हैं। भारत में खेती लगातार आधुनिक होती जा रही है और किसानों को ऐसे ट्रैक्टर की जरूरत होती है जो ताकतवर होने के साथ-साथ ईंधन की बचत भी करे। प्रीत कंपनी का प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर इसी जरूरत को ध्यान में रखकर बनाया गया है। यह ट्रैक्टर मध्यम और बड़े किसानों के लिए एक मजबूत विकल्प माना जाता है, क्योंकि इसमें आधुनिक तकनीक, बेहतर इंजन क्षमता और भारी कार्य करने की क्षमता मौजूद

है। खेत की जुताई, बुवाई, ट्रॉली खींचने या रोटावेटर चलाने जैसे कार्यों में यह ट्रैक्टर शानदार प्रदर्शन देता है। इसकी मजबूत बॉडी और संतुलित डिजाइन इसे लंबे समय तक उपयोग के लिए उपयुक्त बनाते हैं।

इंजन की ताकत और प्रदर्शन

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर में 3 सिलेंडर वाला शक्तिशाली इंजन दिया गया है, जिसकी क्षमता 3308 सीसी है। यह इंजन 55 HP कैटेगरी में आता है, जो इसे भारी कृषि कार्यों के लिए सक्षम बनाता है। मजबूत इंजन होने के कारण ट्रैक्टर कम RPM पर भी अच्छा टॉर्क प्रदान करता है, जिससे ईंधन की बचत होती है और मशीन पर दबाव कम पड़ता है। इसका ड्राई टाइप एयर फिल्टर इंजन को धूल और मिट्टी से सुरक्षित रखता है, जिससे इंजन की लाइफ बढ़ती है। लंबे समय तक लगातार काम करने पर भी इंजन ज्यादा गर्म नहीं होता, जो भारतीय मौसम और खेतों की परिस्थितियों के लिए बेहद जरूरी है।

पीटीओ पावर और कृषि उपकरणों के लिए उपयुक्तता

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर की पीटीओ (Power Take-Off) पावर 44 HP है, जो विभिन्न कृषि उपकरणों को आसानी से चलाने में मदद करती है। रोटावेटर, थ्रेशर, स्प्रेयर और अन्य मशीनें चलाने के लिए पर्याप्त शक्ति मिलती है। मजबूत पीटीओ सिस्टम के कारण ट्रैक्टर मल्टी-टास्किंग कार्यों के लिए आदर्श बन जाता है। किसान एक ही मशीन से कई प्रकार के कृषि कार्य कर सकते हैं, जिससे अलग-अलग उपकरणों पर खर्च कम होता है। पीटीओ की स्थिर पावर आउटपुट मशीन की कार्यक्षमता बढ़ाती है और उत्पादन क्षमता में सुधार करती है।

ट्रांसमिशन और गियर बॉक्स सिस्टम

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर में 8 फॉरवर्ड और 2 रिवर्स गियर बॉक्स दिया गया है, जो अलग-अलग खेत और सड़क की परिस्थितियों में बेहतर नियंत्रण प्रदान करता है। गियर शिफ्टिंग स्मूद होने के कारण चालक को ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ती। यह ट्रांसमिशन सिस्टम ट्रैक्टर को धीमी गति वाले कृषि कार्यों से लेकर तेज ट्रांसपोर्ट कार्यों तक सक्षम बनाता है। खेत में सटीक नियंत्रण और सड़क पर बेहतर स्पीड दोनों का संतुलन इस ट्रैक्टर की बड़ी खासियत है। गियर रेशियो इस तरह डिजाइन किया गया है कि ट्रैक्टर भारी लोड के साथ भी आसानी से चल सके।

क्लच और ब्रेक सिस्टम की विशेषताएं

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर में ड्यूल क्लच सिस्टम दिया गया है, जो ट्रैक्टर और पीटीओ दोनों को अलग-अलग नियंत्रित करने की सुविधा देता है। इससे मशीन चलाते समय कार्य में रुकावट नहीं आती और उत्पादकता बढ़ती है। इसके अलावा ऑयल इमर्स्ड ब्रेक्स लगाए गए हैं, जो लंबे समय तक टिकाऊ और सुरक्षित माने जाते हैं। ये ब्रेक ज्यादा गर्म नहीं होते और खराब रास्तों या भारी वजन के साथ भी बेहतरीन नियंत्रण देते हैं। सुरक्षा के लिहाज से यह फीचर किसानों के लिए बहुत महत्वपूर्ण है, खासकर जब ट्रॉली या भारी उपकरण उपयोग में हों।

स्टीयरिंग और ड्राइविंग आराम

प्रीत 6049 सुपर योद्धा में ड्यूल एक्टिंग पावर स्टीयरिंग दी गई है, जिससे ट्रैक्टर चलाना आसान और आरामदायक हो जाता है। लंबे समय तक काम करने पर चालक को थकान कम महसूस होती है।
खेतों में बार-बार मोड़ लेने या संकरी जगहों पर काम करते समय यह स्टीयरिंग सिस्टम बहुत मददगार साबित होता है। बेहतर नियंत्रण और स्मूद हैंडलिंग के कारण नए चालक भी इसे आसानी से चला सकते हैं। आरामदायक ड्राइविंग अनुभव के कारण कार्य क्षमता बढ़ती है और समय की बचत होती है।

वजन उठाने की क्षमता और उपयोगिता

प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर की वजन उठाने की क्षमता 2200 किलोग्राम है, जो इसे भारी कृषि

Global
4WD
Expert
Solis
IN COLLABORATION WITH
YANMAR
INTRODUCING THE
ALL-NEW SOLIS
S90
THE SUPREME POWER OF
ADVANCED JAPANESE TECHNOLOGY
POWERPACK PERFORMER
WITH 12F+12R SPEEDS
NEW S-TECH ENGINE
WITH 90HP HIGH POWER
S-BOOST HYDRAULICS
WITH UPTO 3500KG LIFT CAPACITY
AC CABIN
WITH WIDE & OPEN PLATFORM
90HP

उपकरणों के लिए उपयुक्त बनाती है। कल्टीवेटर, रोटावेटर, सीड ड्रिल और अन्य भारी मशीनें आसानी से जोड़ी जा सकती हैं। 2WD (टू व्हील ड्राइव) सिस्टम होने के बावजूद इसका बैलेंस और ग्रिप काफी मजबूत है। खेतों में स्थिरता बनाए रखने के लिए इसका डिजाइन संतुलित रखा गया है। भारी वजन उठाने की क्षमता के कारण यह ट्रैक्टर मल्टी-पर्पज उपयोग के लिए आदर्श माना जाता है, जिससे किसानों की कार्यक्षमता और उत्पादन दोनों बढ़ते हैं।

प्रीत 6049 सुपर योद्धा की भारत में कीमत

भारतीय वाणिज्यिक वाहन बाजार में प्रीत 6049 सुपर योद्धा ट्रैक्टर की कीमत लगभग ₹6,29,800 से ₹6,76,800 तक रखी गई है, जो इसके फीचर्स और क्षमता के अनुसार उचित मानी जाती है।

यह कीमत अलग-अलग राज्यों और वेरिएंट के अनुसार थोड़ी बदल सकती है। प्रीत 6049 सुपर योद्धा (Preet 6049 Super Yodha) ट्रैक्टर के साथ सामान्यतः 1500 घंटे या 1 वर्ष (जो पहले आए) की वारंटी प्रदान दी जाती है। यह 55 HP श्रेणी का ट्रैक्टर है, जिस पर मिलने वाली वारंटी मुख्य भागों के नुकसान को कवर करती है। वारंटी की सटीक जानकारी के लिए हमेशा डीलर से पुष्टि करें।

कुल मिलाकर, मजबूत इंजन, ड्यूल क्लच, ऑयल इमर्स्ड ब्रेक, पावर स्टीयरिंग और उच्च लिफ्टिंग क्षमता जैसे फीचर्स इसे किसानों के लिए एक भरोसेमंद निवेश बनाते हैं। यह ट्रैक्टर उन किसानों के लिए बेहतरीन विकल्प है जो कम खर्च में शक्तिशाली और टिकाऊ मशीन चाहते हैं। आधुनिक खेती की जरूरतों को पूरा करने वाला यह ट्रैक्टर प्रदर्शन, आराम और ताकत का संतुलित मिश्रण प्रदान करता है।

स्वराज 8200 मल्टीक्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर: जानें, कीमत, स्पेसिफिकेशन और फीचर्स

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर: मल्टीक्रॉप कटाई के लिए बेहतरीन विकल्प

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर आधुनिक कृषि की जरूरतों को ध्यान में रखकर तैयार किया गया एक उन्नत ट्रैक्टर-चालित हार्वेस्टर है। यह मशीन कटाई, मड़ाई और सफाई जैसे तीनों प्रमुख कार्य एक साथ करके किसानों का समय और श्रम दोनों बचाती है। बढ़ती श्रम लागत और कम समय में अधिक उत्पादन की आवश्यकता को देखते हुए यह मॉडल किसानों के लिए एक भरोसेमंद समाधान बनकर उभरा है। अपनी मजबूत बनावट, आधुनिक तकनीक और बेहतर कार्यक्षमता के कारण यह छोटे और मध्यम से बड़े किसानों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहा है।

आधुनिक खेती के लिए स्मार्ट डिजाइन

Swaraj 8200 Combine Harvester को इस तरह डिजाइन किया गया है कि यह विभिन्न प्रकार की फसलों और खेतों की परिस्थितियों में

बेहतरीन प्रदर्शन कर सके। इसकी संरचना मजबूत और संतुलित है, जिससे यह लंबे समय तक लगातार काम कर सकता है। मशीन का ढांचा टिकाऊ मेटल बॉडी से बना है, जो कठिन खेत की परिस्थितियों में भी स्थिरता बनाए रखता है। इसका एर्गोनॉमिक डिजाइन ऑपरेटर को आरामदायक संचालन की सुविधा देता है, जिससे लंबे समय तक काम करते हुए भी थकान कम होती है।

पावरफुल इंजन और बेहतरीन परफॉर्मेंस

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर में MCVNC35TI110CE4 मॉडल का डीजल इंजन दिया गया है, जिसकी पावर 73.5 kW @ 2200 rpm है। यह डायरेक्ट इंजेक्शन, फोर स्ट्रोक, टर्बोचार्ज्ड इंटरकूलर डीजल इंजन है, जो खेत में स्थिर और दमदार प्रदर्शन देता है। अधिकतम इंजन आउटपुट 74.8 kW @ 2250 rpm तक पहुंचता है, जिससे यह भारी फसल की कटाई में भी उत्कृष्ट कार्य करता है। ड्राई टाइप हेवी ड्यूटी एयर क्लीनर इंजन को धूल और मिट्टी से सुरक्षित रखता है, जिससे इसकी आयु और कार्यक्षमता दोनों बढ़ती हैं।

चौड़ा और प्रभावी कटिंग मैकेनिज्म

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर में 4.2 मीटर (14 फीट) चौड़ाई वाला कटर बार दिया गया है, जो एक बार में अधिक क्षेत्र की कटाई करने में सक्षम है। न्यूनतम कटिंग हाइट 35 मिमी है, जिससे फसल को जड़ के पास से काटा जा सकता है। इससे खेत में अवशेष कम बचते हैं और अगली बुवाई के लिए जमीन बेहतर तैयार होती है। चौड़े कटर बार की वजह से कम समय में अधिक क्षेत्र की कटाई संभव है, जिससे किसानों की उत्पादकता बढ़ती है।

एडवांस रील सिस्टम और कंट्रोल

स्वराज 8200 में रील स्पीड कंट्रोल के लिए मैकेनिकल वैरिएटर का उपयोग किया गया है, जिससे फसल के अनुसार रील की गति को नियंत्रित किया जा सकता है। हाइट कंट्रोल के लिए हाइड्रोलिक सिस्टम दिया गया है, जो खेत की ऊंचाई और फसल की स्थिति के अनुसार समायोजित किया जा सकता है। यह सुविधा कटाई प्रक्रिया को और अधिक सटीक और कुशल बनाती है।

थ्रेशिंग और क्लीनिंग सिस्टम की मजबूती

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर में 1274 मिमी चौड़ाई और 600 मिमी डायमीटर वाला थ्रेशिंग ड्रम दिया गया है। इसकी स्पीड 525 से 1125 RPM तक समायोजित की जा सकती है। मैकेनिकल एडजस्टमेंट की सुविधा के कारण फसल के प्रकार के अनुसार सेटिंग बदली जा सकती है। इसका बेहतर क्लीनिंग सिस्टम अनाज को भूसे और कचरे से अलग कर उच्च गुणवत्ता वाला दाना प्रदान करता है।

बेहतर ग्रेन क्वालिटी और कम नुकसान

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर का उन्नत सफाई तंत्र अनाज की गुणवत्ता को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कम से कम अनाज नुकसान और अधिकतम शुद्धता इसकी खास पहचान है। बेहतर थ्रेशिंग और क्लीनिंग सिस्टम के कारण दानों की टूट-फूट कम होती है, जिससे बाजार में अच्छी कीमत मिलती है। यह विशेषता किसानों की आय बढ़ाने में सहायक साबित होती है।

मल्टीक्रॉप हार्वेस्टिंग क्षमता

यह स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर मशीन गेहूं, धान, जौ, सोयाबीन, दालें और तिलहन जैसी विभिन्न फसलों की कटाई में सक्षम है। मल्टीक्रॉप क्षमता के कारण किसान एक ही मशीन से अलग-अलग फसलों की हार्वेस्टिंग कर सकते हैं। इससे अलग-अलग उपकरण खरीदने की जरूरत नहीं पड़ती और लागत में बचत होती है। फसल के अनुसार एडजस्टमेंट की सुविधा इसकी उपयोगिता को और बढ़ाती है।

फ्यूल एफिशिएंसी और कम ऑपरेटिंग कॉस्ट

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर अपनी बेहतर फ्यूल एफिशिएंसी के लिए भी जाना जाता है। कम डीजल खपत के साथ अधिक समय तक काम करने की क्षमता इसको एक किफायती विकल्प बनाती है। ईंधन की बचत सीधे तौर पर किसानों की लागत कम करती है और मुनाफा बढ़ाती है। इसके मजबूत इंजन और उन्नत तकनीक के कारण रखरखाव खर्च भी अपेक्षाकृत कम रहता है।

स्वराज 8200 हार्वेस्टर की कीमत, विश्वसनीयता और स्मार्ट निवेश

स्वराज 8200 कंबाइन हार्वेस्टर की कीमत इसकी एडवांस तकनीक और उच्च कार्यक्षमता को देखते हुए उचित मानी जाती है। यह मशीन लंबे समय तक टिकाऊ प्रदर्शन देती है, जिससे यह किसानों के लिए एक समझदारी भरा निवेश साबित होती है। कम समय में अधिक उत्पादन, कम फसल नुकसान और उच्च गुणवत्ता वाला अनाज। इन सभी विशेषताओं के कारण यह मॉडल बाजार में एक मजबूत पहचान बना चुका है। यदि किसान आधुनिक, भरोसेमंद और मल्टीक्रॉप कंबाइन हार्वेस्टर की तलाश में हैं, तो स्वराज 8200 एक बेहतरीन विकल्प है।

तेलंगाना में लॉन्च हुआ न्यू हॉलैंड वर्कमास्टर 105 HVAC ट्रैक्टर: आधुनिक फीचर्स से लैस

न्यू हॉलैंड वर्कमास्टर 105 HVAC की तेलंगाना में एंट्री- जानें, ट्रैक्टर की खासियत

न्यू हॉलैंड एग्रीकल्चर (सीएनएच इंडस्ट्रियल का एक प्रमुख ब्रांड) ने तेलंगाना में अपना नया और शक्तिशाली WORKMASTER 105 ट्रैक्टर ऑल-वेदर (HVAC) केबिन के साथ लॉन्च किया है। तेलंगाना को इस ट्रैक्टर के राज्य स्तरीय लॉन्च के लिए इसलिए चुना गया क्योंकि यहां की मजबूत कृषि व्यवस्था, विविध फसल पैटर्न और सक्रिय किसान समुदाय नई तकनीक को तेजी से अपनाने के लिए जाना जाता है। इस भव्य लॉन्च कार्यक्रम का नेतृत्व कंपनी के सेल्स डायरेक्टर संदीप गुप्ता ने किया। कार्यक्रम में रिटेल हेड, जोनल हेड, प्रोडक्ट हेड, ब्रांड हेड और सीबीयू हेड सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे। इसके अलावा तेलंगाना और आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में किसान,

डीलर, मीडिया प्रतिनिधि और फाइनेंस पार्टनर भी शामिल हुए। यह लॉन्च कंपनी के लिए राज्य स्तर पर एक महत्वपूर्ण विस्तार कदम माना जा रहा है।

विविध फसलों और बदलते मौसम के लिए खास डिजाइन

न्यू हॉलैंड वर्कमास्टर 105 HVAC केबिन ट्रैक्टर को भारतीय खेती की विविध आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर डिजाइन किया गया है। भारत में अलग-अलग राज्यों में मिट्टी के प्रकार, जलवायु और फसलें भिन्न होती हैं। ऐसे में यह ट्रैक्टर हर प्रकार की खेती—चाहे वह धान, कपास, मक्का, गन्ना या बागवानी फसलें हों—के लिए उपयुक्त बनाया गया है। बदलते मौसम, तेज गर्मी, धूल भरे वातावरण और लंबी कार्य अवधि को देखते हुए इसमें ऑल-वेदर HVAC केबिन दिया गया है, जो चालक को हर मौसम में आरामदायक कार्य अनुभव प्रदान करता है। इसका मजबूत इंजन और संतुलित परफॉर्मेंस इसे दैनिक कृषि कार्यों, जुताई, रोटावेटर, हैरो, सीड ड्रिल और भारी ट्रॉली ढुलाई जैसे कामों के लिए आदर्श बनाते हैं। भारत में निर्मित यह ट्रैक्टर भविष्य की आधुनिक खेती की जरूरतों को पूरा करने के उद्देश्य से तैयार किया गया है, जिससे किसान अधिक उत्पादकता और बेहतर आय हासिल कर सकें।

न्यू हॉलैंड WORKMASTER 105: पावर और आराम का बेहतरीन संगम

न्यू हॉलैंड वर्कमास्टर 105 एचवीएसी ट्रैक्टर 106 हॉर्सपावर की ताकत के साथ आता है, जो इसे हैवी-ड्यूटी खेत कार्यों के लिए उपयुक्त बनाता है। यह TREM-IV मानकों के अनुरूप 4WD (चार पहिया ड्राइव) ट्रैक्टर है, जो कम ईंधन खपत के साथ बेहतर प्रदर्शन देता है। इसमें 3.4 लीटर का शक्तिशाली FPT इंजन लगाया गया है, जो कठिन परिस्थितियों में भी स्थिर और भरोसेमंद काम करता है। ट्रांसमिशन की बात करें तो इसमें 20 फॉरवर्ड + 20 रिवर्स गियरबॉक्स दिया गया है, जिससे अलग-अलग स्पीड विकल्प मिलते हैं और खेत के अनुसार सटीक नियंत्रण संभव होता है। 3,500 किलोग्राम की लिफ्टिंग क्षमता इसे भारी कृषि उपकरणों को आसानी से संभालने योग्य बनाती है। इस ट्रैक्टर की सबसे खास विशेषता इसका 316 डिग्री क्लियर व्यू वाला केबिन है, जिससे चालक को चारों ओर बेहतर दृश्यता मिलती है और काम के दौरान सुरक्षा व सटीकता बढ़ती है। एयर सस्पेंशन सीट लंबी अवधि तक काम करते समय थकान को कम करती है। साथ ही मजबूत कूलिंग सिस्टम इसे गर्म और कठिन परिस्थितियों में भी बिना रुकावट काम करने में सक्षम बनाता है।

आधुनिक किसानों के लिए भरोसेमंद विकल्प

WORKMASTER 105 को वर्ष 2025 के अंत में भारत में पेश किया गया था और अब तेलंगाना में इसका आधिकारिक राज्य स्तरीय लॉन्च किया गया है। यह ट्रैक्टर आधुनिक तकनीक, उच्च शक्ति, आरामदायक केबिन और मजबूत निर्माण का बेहतरीन संयोजन है।

बढ़ती मशीनीकरण की आवश्यकता और बदलते जलवायु परिदृश्य को देखते हुए यह ट्रैक्टर किसानों के लिए एक भरोसेमंद और भविष्य उन्मुख विकल्प साबित हो सकता है। जो किसान लंबी अवधि तक भारी कार्य करते हैं और बेहतर आराम के साथ अधिक उत्पादन चाहते हैं, उनके लिए यह मॉडल एक उपयुक्त समाधान प्रदान करता है।

डेयरी फार्मिंग से जुड़ी सम्पूर्ण जानकारी

डेयरी पालन छोटे/सीमांत किसानों और कृषि मजदूरों के लिए सहायक आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। पशुओं से प्राप्त गोबर मिट्टी की उर्वरता और फसल की पैदावार बढ़ाने के लिए एक अच्छा जैविक पदार्थ प्रदान करता है।

गोबर गैस को घरेलू ईंधन के रूप में और कुओं से पानी निकालने के लिए इंजनों को चलाने के लिए भी प्रयोग किया जाता है। अतिरिक्त चारा और कृषि उप-उत्पादों का उपयोग पशुओं को खिलाने के लिए लाभप्रद रूप से किया जाता है।

खेत के कार्यों और परिवहन के लिए लगभग सभी जोत शक्ति बैलों से प्राप्त होती है। चूँकि कृषि अधिकतर मौसमी होती है, इसलिए डेयरी पालन के माध्यम से वर्षभर कई लोगों के लिए रोजगार की संभावना रहती है। इस प्रकार, डेयरी पालन साल भर रोजगार उपलब्ध कराता है।

विश्व बैंक के अनुमानों के अनुसार भारत की 94 करोड़ जनसंख्या में से लगभग 75 प्रतिशत 5.87 लाख गांवों में रहते हैं, जहाँ 145 मिलियन हेक्टेयर कृषि भूमि की खेती होती है।

औसत खेत आकार लगभग 1.66 हेक्टेयर है। 70 मिलियन ग्रामीण परिवारों में से 42 प्रतिशत 2 हेक्टेयर तक भूमि जोतते हैं और 37 प्रतिशत परिवार भूमिहीन हैं। इन भूमिहीन और छोटे किसानों के पास 53 प्रतिशत पशु हैं और वे 51 प्रतिशत दूध का उत्पादन करते हैं। अतः देश के दूध उत्पादन में इनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है।

डेयरी पालन एक मुख्य व्यवसाय के रूप में भी अपनाया जा सकता है, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों के आस-पास जहाँ दूध की मांग अधिक होती है।

केंद्र और राज्य सरकारें दूध उत्पादन के लिए बुनियादी ढांचे के निर्माण हेतु वित्तीय सहायता प्रदान कर रही हैं। पशुपालन और डेयरी के लिए नवें पंचवर्षीय योजना में ₹2,345 करोड़ का प्रावधान किया गया था।

डेयरी किसानों के लिए अनुशंसित सामान्य प्रबंधन पद्धतियाँ

डेयरी खोलने के लिए कई बातों का ध्यान रखना बहुत आवश्यक है, ये बातें निम्नलिखित है -

डेयरी खोलने के लिए आवास व्यवस्था:

- शेड सूखी और ऊंची जमीन पर बनाएँ।
- जल जमाव और भारी वर्षा वाले क्षेत्रों से बचें।
- शेड की दीवारें 1.5 से 2 मीटर ऊँची और छत 3-4 मीटर ऊँची हों।

- दीवारें नमी-रोधी प्लास्टर की हों।
- शेड हवादार हो और फर्श पक्का, ढलानयुक्त (3 से.मी./मीटर), फिसलन रहित तथा स्वच्छ हो।
- पशु के लिए पर्याप्त स्थान, छायादार क्षेत्र, ठंडा पानी, उचित सफाई, और परजीवी नियंत्रण की व्यवस्था हो।

पशु का चयन:
- ऋण मिलने के तुरंत बाद विश्वसनीय विक्रेता से स्वस्थ पशु खरीदें।
- दूसरी/तीसरी बियाई में ताजा ब्याई पशु लें।
- दूध उत्पादन का आकलन करके ही खरीदें।
- दो दुधारू पशुओं की न्यूनतम इकाई खरीदें और दूसरे पशु को 5-6 माह बाद खरीदें।

पशुओं का आहार:
- उच्च गुणवत्ता का चारा दें।
- हरा चारा पर्याप्त मात्रा में हो, कटा हुआ व उचित समय पर काटा गया हो।
- खलियां अच्छी गुणवत्ता की हों।
- खनिज, विटामिन, नमक आदि की पूर्ति करें।
- गर्मी में स्नान या पानी का छिड़काव करें।
- शरीर के वजन का 2.5-3% सूखा आहार प्रतिदिन दें।

दुग्ध दुहन:
- प्रतिदिन 2-3 बार एक ही समय पर दूध दुहें।
- दूध दोहते समय सफाई का विशेष ध्यान रखें।
- बीमार पशु का दूध अंत में दुहें।

रोग से सुरक्षा:
- पशुओं के व्यवहार में बदलाव पर सतर्क रहें।
- बीमार पशु को अलग करें और पशु चिकित्सक से सलाह लें।
- ब्रुसेलोसिस, टीबी, मास्टाइटिस आदि की नियमित जांच कराएं।
- समय-समय पर कृमिनाशक दवाएं दें।

प्रजनन देखभाल:
- गर्मी के समय, गर्भधारण, प्रसव आदि का रिकॉर्ड रखें।
- बियान के 60-80 दिनों के भीतर पशु को गाभिन कराएं।

गर्भावस्था में देखभाल:
- बियान से दो महीने पहले अतिरिक्त ध्यान दें – आहार, जगह, पानी इत्यादि।

दूध विपणन:
- दूध तुरंत और स्वच्छ बर्तनों में बिक्री हेतु भेजें।
- दूध के बर्तनों को क्लोरीन युक्त पानी से धोकर साफ रखें।
- ठंडे समय में दूध का परिवहन करें।

बछड़ों की देखभाल:
- जन्म के तुरंत बाद नाभि को टिंचर आयोडीन से साफ करें।
- 30 मिनट के भीतर बछड़े को खीस (कोलोस्ट्रम) पिलाएं।
- 2 महीने तक बछड़े को अलग रखें, टीका लगवाएं, सींग हटवाएं (डेहॉर्निंग) करें।

डेयरी खोलने के लिए वित्तीय सहायता

NABARD (राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक) डेयरी योजनाओं के लिए ऋण और पुनर्वित्त सुविधा प्रदान करता है। किसान अपने निकटतम वाणिज्यिक या सहकारी बैंक शाखा में आवेदन कर सकते हैं। तकनीकी अधिकारी या बैंक प्रबंधक सहायता करेंगे।

बड़ी डेयरी योजनाओं के लिए विस्तृत परियोजना रिपोर्ट बनानी होती है जिसमें शामिल होते हैं:

- पशुओं की खरीद
- शेड का निर्माण

- उपकरणों की खरीद
- शुरुआती आहार का खर्च
- परिवहन, गोदाम, प्रोसेसिंग इत्यादि

भूमि की लागत को ऋण में शामिल नहीं किया जाता, लेकिन यदि भूमि डेयरी के लिए खरीदी जाती है तो इसकी लागत को कुल परियोजना लागत का 10% तक किसानों की अंश पूंजी के रूप में माना जा सकता है।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर – पशुओं के स्वास्थ्य का प्राकृतिक सुरक्षा कवच

आपके पशुओं के लिए हर्बल हेल्थ बूस्टर – एनीमल टॉक्सआउट पाउडर

Animax Toxout Powder: पशुपालन में पशुओं का स्वास्थ्य और उनकी उत्पादक क्षमता बहुत महत्वपूर्ण होती है। यदि पशु स्वस्थ न हों, तो दुग्ध उत्पादन, प्रजनन क्षमता और उनकी सामान्य गतिविधियों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। ऐसे में पशुओं के शरीर में जमा हुए टॉक्सिन या हानिकारक तत्वों को बाहर निकालना अत्यंत आवश्यक है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को विशेष रूप से तैयार किया गया है।

यह एक हर्बल वेटरनरी दवा है जो प्राकृतिक तत्वों से निर्मित है और पशुओं के शरीर को अंदर से शुद्ध कर उन्हें स्वस्थ रखने में मदद करती है।

एनीमल टॉक्स आउट पाउडर की मुख्य विशेषताएं

- **प्रोडक्ट का नाम** - एनीमल टॉक्सआउट पाउडर (Animal Toxout Powder)
- **दवा का प्रकार** - हर्बल वेटरनरी मेडिसिन
- **भौतिक रूप** - पाउडर
- **सामग्री (Ingredients)** - विशेष हर्बल सॉल्यूशन कंपाउंड (नीम की पत्तियों का रस, सोडियम फॉर्मेट, एक्टिवेटेड चारकोल व फाइलीसिलिकेट्स से युक्त एक शक्तिशाली टॉक्सिन बाइंडर)
- **उपयोग हेतु अनुशंसित** - गाय, भैंस, बैल, बछड़ा आदि सभी प्रकार के पशुओं के लिए
- **पैकिंग** - 1 किलोग्राम , 2 किलोग्राम, 25 किलोग्राम पैक
- **स्टोरेज** - सामान्य कमरे के तापमान पर रखें

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर का उपयोग और लाभ

पशुओं के शरीर में समय के साथ खराब आहार, दूषित पानी, कीटनाशकों या रासायनिक दवाओं के कारण विषैले तत्व जमा हो सकते हैं। ये टॉक्सिन पशुओं में कमजोरी, अपच, भूख न लगना, दूध की मात्रा कम होना, रोगों की संभावना बढ़ना और थकान जैसी समस्याएँ पैदा करते हैं। एनीमल टॉक्सआउट पाउडर इन सभी समस्याओं को खत्म करने में अत्यंत कारगर है।

पशुपालक मित्रों, निम्नलिखित परिस्थितियों में टॉक्सआउट पाउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए :

- जब पशुओं को बार-बार थनेला हो रहा है।

- जब पशु लगातार पतला गोबर कर रहा है।
- जब पशु के दूध से बदबू आ रही है।
- जब दूध की दही अच्छी नहीं जम रही है।
- जब पशु इलाज के बाद भी बार-बार बीमार पड़ रहा हो।

पशुपालक मित्रों, फसलों में अत्याधुनिक खाद के इस्तेमाल के कारण आजकल हम खाने के माध्यम से जो जहर खा रहे हैं, उसके प्रभाव को कम करने के लिए टॉक्सआउट पाउडर का इस्तेमाल अवश्य करना चाहिए।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर के मुख्य लाभ

1. एनीमल टॉक्सआउट पाउडर टॉक्सिन बाहर निकालता है: यह पशुओं के शरीर में जमा हानिकारक तत्वों को प्राकृतिक रूप से बाहर निकालता है।
2. पाचन तंत्र मजबूत: यह पाचन शक्ति एवं चयापचय प्रक्रिया में सुधार करता है।
3. भूख बढ़ाता है: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर भूख कम होने वाली स्थिति में भी यह दवा भूख बढ़ाकर शरीर में पोषण पहुँचाती है।
4. दूध उत्पादन में वृद्धि: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर गाय-भैंसों में दूध की मात्रा और गुणवत्ता बढ़ाने में मददगार।
5. रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर पशुओं को बीमारियों से लड़ने की क्षमता देता है।
6. पूरी तरह सुरक्षित: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर में किसी भी रासायनिक तत्व का प्रयोग नहीं किया गया है, इसलिए यह बिना किसी साइड इफेक्ट के है।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को कैसे उपयोग करें

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की मात्रा पशु के वजन और स्थिति के अनुसार वेटरनरी डॉक्टर की सलाह से दें। एनीमल टॉक्सआउट पाउडर को चारे या दाने में मिलाकर आसानी से पशु को खिलाया जा सकता है।

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की खुराक

बड़े पशुओं में – 50 ग्राम प्रतिदिन
छोटे पशुओं में – 25 ग्राम प्रतिदिन
(1.5 – 2 किलोग्राम प्रति टन दाना के लिए)

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर की व्यापार और आपूर्ति संबंधित जानकारी

- न्यूनतम ऑर्डर मात्रा - 100 पैक
- भुगतान विधि - कैश इन एडवांस
- सप्लाई क्षमता - 5000 पैक प्रति माह
- डिलीवरी समय - 7-10 दिन
- उपलब्धता - पूरे भारत में डिलीवरी

क्यों चुनें एनीमल टॉक्सआउट पाउडर?

एनीमल टॉक्सआउट पाउडर हर्बल और सुरक्षित होता है और ये इस्तेमाल में आसान है। पाउडर लंबे समय तक असरदार रहता है और बेहतर पशु स्वास्थ्य और उच्च उत्पादकता के लिए किफायती और विश्वसनीय है। अगर आप अपने पशुओं को हर प्रकार की अंदरूनी अशुद्धियों और विषाक्त तत्वों से मुक्त रखना चाहते हैं और उनकी उत्पादन क्षमता बढ़ाना चाहते हैं, तो एनीमल टॉक्सआउट पाउडर एक श्रेष्ठ और लाभकारी विकल्प है। यह प्राकृतिक तत्वों से बना है, इसलिए इसके इस्तेमाल से किसी भी प्रकार का साइड इफेक्ट नहीं होता। इसका नियमित उपयोग आपके पशुओं को स्वस्थ, सक्रिय और उत्पादक बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अक्सर पूछे जाने वाले सवाल और उनके जबाव

प्रश्न: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर(Animax Toxout Powder) क्या है?
उत्तर: यह एक हर्बल वेटरनरी दवा है जो पशुओं के शरीर में जमा हानिकारक टॉक्सिन को बाहर निकालकर उन्हें स्वस्थ रखने में मदद करती है।

प्रश्न: यह किस-किस पशु के लिए उपयोगी है?
उत्तर: गाय, भैंस, बैल, बछड़ा समेत सभी प्रकार के दुग्ध एवं कार्यशील पशुओं के लिए।

प्रश्न: यह किस रूप में उपलब्ध है?
उत्तर: यह पाउडर के रूप में उपलब्ध है और 1 किलोग्राम, 2 किलोग्राम , 25 किलोग्राम पैक में आता है।

प्रश्न: एनीमल टॉक्सआउट पाउडर का मुख्य लाभ क्या है?
उत्तर: यह शरीर से विषैले तत्व निकालता है, पाचन शक्ति बढ़ाता है, भूख सुधारता है और दूध उत्पादन में वृद्धि करता है।

प्रश्न: क्या यह दवा सुरक्षित है?
उत्तर: हां, यह पूरी तरह हर्बल है और इसमें किसी भी तरह के रसायन नहीं होते, इसलिए साइड इफेक्ट नहीं होता।

भेड़ पालन व्यवसाय - जानें, भेड़ों की टॉप 5 सबसे अच्छी नस्ले

भारत की 5 सर्वश्रेष्ठ भेड़ नस्लें और उनकी विशेषताएँ

भेड़ पालन भारत में एक पारंपरिक, भरोसेमंद और लाभकारी पशुपालन व्यवसाय माना जाता है। यह व्यवसाय मुख्य रूप से ऊन और मांस उत्पादन के लिए किया जाता है, जबकि कुछ क्षेत्रों में सीमित मात्रा में दूध का उपयोग भी होता है। भेड़ ऊन प्राप्त करने का सबसे प्रमुख और विश्वसनीय स्रोत हैं, इसलिए ऊनी वस्त्र उद्योग में इनका विशेष महत्व है। कम निवेश, अपेक्षाकृत सरल प्रबंधन, कम रख-रखाव और प्राकृतिक चरागाहों पर आसानी से पालन हो जाने के कारण भेड़ पालन छोटे, सीमांत और संसाधन-सीमित किसानों के लिए भी उपयुक्त व्यवसाय है। सही योजना और नस्ल चयन के साथ यह नियमित आय का अच्छा साधन बन सकता है। हालांकि, भेड़ पालन में वास्तविक सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि किसान अपने क्षेत्र की जलवायु, उपलब्ध चारा, पानी की स्थिति और बाजार की मांग के अनुसार सही नस्ल का चयन करें। भारत में भेड़ों की कई उन्नत और स्थानीय नस्लें पाई जाती हैं, जिनमें ऊन की गुणवत्ता, शरीर का वजन, रोग सहनशीलता और उत्पादन क्षमता के आधार पर काफी अंतर होता है। नीचे गद्दी, दक्कनी, मांड्या, नेल्लोर और मारवाड़ी भेड़ नस्लों की विशेषताओं का विस्तृत विवरण दिया गया है, जिससे किसान अपने लिए उपयुक्त नस्ल चुन सकें।

1. गद्दी नस्ल की भेड़

गद्दी नस्ल की भेड़ें मुख्य रूप से जम्मू-कश्मीर और हिमाचल प्रदेश के पहाड़ी एवं ठंडे क्षेत्रों में पाई जाती हैं। यह नस्ल आकार में अपेक्षाकृत छोटी होती है, लेकिन कठोर ठंड और ऊंचाई वाले इलाकों में भी आसानी से जीवित रहने की क्षमता रखती है। गद्दी नस्ल का प्रमुख उद्देश्य ऊन उत्पादन है। नर भेड़ों में मजबूत सींग पाए जाते हैं, जबकि मादा भेड़ें सामान्यतः सींग रहित होती हैं। इनका ऊन सफेद, चमकदार और मध्यम गुणवत्ता का होता है, जिसकी बाजार में स्थिर मांग बनी रहती है। एक गद्दी भेड़ से औसतन 1.0 से 1.2 किलोग्राम ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त हो जाता है। आमतौर पर वर्ष में 2 से 3 बार ऊन की कटाई की जाती है। पर्वतीय क्षेत्रों के किसानों के लिए यह नस्ल विशेष रूप से उपयोगी और लाभकारी मानी जाती है।

2. दक्कनी नस्ल की भेड़

दक्कनी भेड़ें भारत की प्रमुख ऊन उत्पादक नस्लों में गिनी जाती हैं। यह नस्ल आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे गर्म और शुष्क क्षेत्रों में अधिक पाई जाती है। इन क्षेत्रों की जलवायु के अनुसार यह नस्ल अच्छी तरह अनुकूलित हो चुकी है। दक्कनी भेड़ों का रंग सामान्यतः काला या गहरा भूरा होता है। इनसे ऊन का उत्पादन मात्रा में अधिक होता है, हालांकि गुणवत्ता अपेक्षाकृत मोटी होती है। प्रति भेड़ लगभग 4 से 5 किलोग्राम ऊन प्रतिवर्ष प्राप्त किया जा सकता है। इस नस्ल का ऊन बालों और रेशों के मिश्रण से बना होता है, जिसका उपयोग मुख्यतः मोटे कंबल, दरी और कालीन बनाने में किया जाता है। कठिन जलवायु में भी टिके रहने की क्षमता इसे किसानों के लिए उपयोगी बनाती है।

3. मांड्या नस्ल की भेड़

मांड्या नस्ल मुख्य रूप से कर्नाटक के मांड्या जिले और आसपास के क्षेत्रों में पाई जाती है। यह एक छोटी कद-काठी वाली नस्ल है, लेकिन मांस उत्पादन के लिए काफी लोकप्रिय है। इस नस्ल की भेड़ों का रंग प्रायः सफेद होता है, जबकि कभी-कभी चेहरे पर हल्का भूरा रंग भी दिखाई देता है। नर भेड़ का औसत वजन लगभग 30–35 किलोग्राम तथा मादा भेड़ का वजन 22–25 किलोग्राम के बीच होता है। मांड्या भेड़ों से ऊन की मात्रा कम प्राप्त होती है, लेकिन मांस की गुणवत्ता अच्छी मानी जाती है। कम चारे में पलने और स्थानीय परिस्थितियों में जल्दी ढल जाने की क्षमता के कारण यह नस्ल किसानों के लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित होती है।

4. नेल्लोर नस्ल की भेड़

नेल्लोर नस्ल को भारत की सबसे लंबी कद-काठी वाली भेड़ नस्ल माना जाता है। यह मुख्य रूप से आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के क्षेत्रों में पाई जाती है और मांस उत्पादन के लिए प्रसिद्ध है। इस नस्ल के शरीर पर ऊन लगभग नहीं के बराबर होता है, बल्कि छोटे और घने बाल पाए जाते हैं। बनावट में यह कुछ हद तक बकरी जैसी दिखाई देती है। इसके कान लंबे और झुके हुए होते हैं तथा चेहरा भी लंबा होता है। नर नेल्लोर भेड़ का औसत वजन लगभग 36–38 किलोग्राम और मादा का वजन 28–30 किलोग्राम तक होता है। अधिकतर भेड़ें लाल रंग की होती हैं, इसी कारण इसे “नेल्लोर रेड” भी कहा जाता है। तेजी से बढ़ने की क्षमता के कारण यह नस्ल व्यावसायिक मांस उत्पादन के लिए उपयुक्त है।

5. मारवाड़ी नस्ल की भेड़

मारवाड़ी भेड़ें राजस्थान की प्रमुख नस्लों में से एक हैं और शुष्क, अर्ध-रेगिस्तानी क्षेत्रों के लिए विशेष रूप से उपयुक्त मानी जाती हैं। यह नस्ल मुख्य रूप से जोधपुर, जयपुर के साथ-साथ उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र के कुछ हिस्सों में भी पाई जाती है। मारवाड़ी भेड़ों का चेहरा काला और नाक उभरी हुई होती है। इनके पैर लंबे और मजबूत होते हैं, जबकि पूंछ छोटी और नुकीली होती है। यह नस्ल कठोर जलवायु, कम पानी और सीमित चारे में भी जीवित रहने में सक्षम होती है। इनका ऊन मध्यम गुणवत्ता का होता है, जबकि मांस की बाजार में अच्छी मांग रहती है। कठिन परिस्थितियों में भी अच्छा उत्पादन देने की क्षमता इसे शुष्क क्षेत्रों के किसानों के लिए आदर्श बनाती है।

भेड़ पालन शुरू करने से पहले ध्यान देने योग्य बातें

भेड़ पालन से पहले कुछ महत्वपूर्ण बातों पर ध्यान देना अत्यंत आवश्यक है। सबसे पहले अपने क्षेत्र की जलवायु और उपलब्ध संसाधनों के अनुसार नस्ल का चयन करें। ऊन या मांस, जिस उद्देश्य से पालन करना हो, उसी के अनुसार नस्ल चुनना लाभकारी रहता है। इसके साथ ही टीकाकरण, कृमिनाशक दवाओं और रोग नियंत्रण पर विशेष ध्यान देना चाहिए, ताकि झुंड स्वस्थ बना रहे। पर्याप्त चरागाह, संतुलित आहार और साफ पानी की नियमित उपलब्धता सुनिश्चित करें। अंत में, स्थानीय बाजार में ऊन और मांस की मांग को

समझकर उत्पादन की योजना बनाएं। सही नस्ल, उचित प्रबंधन और बाजार की जानकारी के साथ भेड़ पालन एक स्थायी और लाभदायक व्यवसाय साबित हो सकता है।

देशी गायों की बेस्ट 3 नस्लें, जो देती हैं ज्यादा दूध और रखरखाव में भी कम खर्च!

भारत की प्रमुख दुग्ध (दूध देने वाली) गायों की नस्लें

भारत में दुग्ध उत्पादन के लिए कई उन्नत नस्लों की गायें पाई जाती हैं, जिनका विकास प्राकृतिक रूप से जलवायु, भौगोलिक परिस्थितियों और स्थानीय पालन पद्धतियों के आधार पर हुआ है। प्रत्येक नस्ल की अपनी विशेषता, दूध देने की क्षमता, शरीर की बनावट और अनुकूलन क्षमता होती है। नीचे भारत की तीन प्रमुख दुग्ध नस्लों – गिर, साहीवाल और हरियाणा – का विस्तृत विवरण दिया गया है।

1. गिर नस्ल (Gir Breed)

- उत्पत्ति: गिर नस्ल का मूल निवास स्थान गुजरात राज्य के सौराष्ट्र क्षेत्र में स्थित गिर जंगल है, इसी कारण इसका नाम गिर पड़ा।
- अन्य क्षेत्र: गुजरात के अलावा राजस्थान और महाराष्ट्र में भी यह नस्ल पाली जाती है और यहाँ की जलवायु के अनुरूप अच्छे से अनुकूलित हो चुकी है।

गिर गाय की पहचान उसकी अनोखी त्वचा के रंग और शरीर की बनावट से की जाती है। इसका शरीर आमतौर पर सफेद रंग का होता है, जिस पर चॉकलेट ब्राउन, लाल या कभी-कभी काले रंग के धब्बे मौजूद रहते हैं। गाय के कान लंबे और ढीले होते हैं, जो आगे की ओर लटकते हुए दिखाई देते हैं। इसके सींग अर्धचंद्राकार आकार के होते हैं, जो इसे एक सुंदर और विशिष्ट रूप प्रदान करते हैं। गिर गाय अपनी शांत स्वभाव, कठोर जलवायु में जीवित रहने की क्षमता और जलवायु परिवर्तन के प्रति उच्च सहनशीलता के लिए जानी जाती है। यह नस्ल रोग प्रतिरोधक क्षमता में भी काफी मजबूत होती है। दूध उत्पादन: सामान्य परिस्थितियों में एक गिर गाय से 1200 से 2200 किलोग्राम (प्रति दुग्धावधि) दूध प्राप्त होता है। कुछ उन्नत प्रबंधन और बेहतर पोषण के साथ यह उत्पादन और भी बढ़ सकता है।

2. साहीवाल नस्ल (Sahiwal Breed)

- उत्पत्ति: साहीवाल नस्ल का उद्गम भारत-पाकिस्तान की सीमा पर स्थित पंजाब के मोंटगोमरी क्षेत्र (अब पाकिस्तान) में हुआ।
- अन्य नाम: इसे कई क्षेत्रों में लोला, लंबी बार, मोंटगोमरी, मुल्तानी और तेली जैसी स्थानीय उपाधियों से भी जाना जाता है।

साहीवाल गाय का रंग हल्का ईंट-लाल से लेकर पीला लाल होता है और कभी-कभी शरीर पर छोटे सफेद धब्बे भी दिखाई देते हैं।

यह नस्ल भारत और दक्षिण एशिया की सबसे अधिक दूध देने वाली शुद्ध भारतीय नस्ल मानी जाती है। यह गर्मी और उष्णकटिबंधीय जलवायु में भी उत्कृष्ट रूप से दूध उत्पादन बनाए रखने में सक्षम है, जो इसे अन्य विदेशी नस्लों से बेहतर बनाता है।

दूध उत्पादन: साहीवाल गाय औसतन 1600 से 3500 किलोग्राम दूध एक दुग्धावधि में देती है, और कई उन्नत प्रजनन केंद्रों में इसका उत्पादन इससे भी अधिक दर्ज किया गया है। साहीवाल का दूध वसा (Fat) में उच्च होता है, जो घी बनाने के लिए श्रेष्ठ माना जाता है

3. हरियाणा नस्ल (Haryana / Haryanvi Breed)

- उत्पत्ति: हरियाणा नस्ल या हरियाणवी गाय मुख्य रूप से हरियाणा के रोहतक, हिसार, जींद और गुरुग्राम जिलों में पाई जाती है।
- अन्य राज्य: कृषि आधारित क्षेत्रों जैसे पंजाब, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश में भी यह नस्ल बड़े पैमाने पर पाली जाती है।
- इस नस्ल की पहचान इसके मजबूत और सशक्त शरीर से होती है। गाय का रंग सामान्यतः ग्रे (सफेद-भूरा मिश्रित) होता है।
- इसके सींग छोटे होते हैं और शरीर कसा हुआ एवं शक्तिशाली होता है।
- दूध उत्पादन: यह नस्ल अन्य दुधारू नस्लों की तुलना में मध्यम स्तर पर दूध देती है, जो लगभग 800 से 1600 किलोग्राम प्रति दुग्धावधि होता है।
- बैल विशेषता: इस नस्ल के बैल अत्यंत शक्तिशाली, सहनशील और मजबूत श्रमिक होते हैं। इन्हें खेतों में हल चलाने, गाड़ी खींचने और अन्य कृषि कार्यों में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

गिर, साहीवाल और हरियाणा नस्लें भारतीय जलवायु और कृषि पद्धतियों के अनुरूप विकसित शुद्ध देसी नस्लें हैं। इनकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि ये कठोर जलवायु, रोगों और कम पोषण वाले वातावरण में भी अच्छे से जीवित रहकर किसान को स्थायी दूध उत्पादन का लाभ दे सकती हैं। इसके अतिरिक्त इनका दूध स्वास्थ्यवर्धक और वसायुक्त होता है, जो घी और दुग्ध उत्पादों के लिए अत्यंत उपयोगी माना जाता है।

Cardamom Farming: इलायची की खेती कैसे करें जानिए सम्पूर्ण जानकारी

इलायची की खेती का बिजनेस जानिए सम्पूर्ण जानकारी

बड़ी इलायची (Zingiberaceae परिवार) एक महत्वपूर्ण नकदी फसल है, जो मुख्य रूप से सिक्किम और पश्चिम बंगाल के दार्जिलिंग जिले में उगाई जाती है। यह मानव द्वारा उपयोग किए जाने वाले सबसे प्राचीन मसालों में से एक है। उत्पादन के मामले में सिक्किम अग्रणी है और यह घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार दोनों में प्रमुख योगदान देता है। हाल के वर्षों में नागालैंड, मेघालय और अरुणाचल प्रदेश जैसे पूर्वोत्तर राज्यों में भी इसकी खेती शुरू हो चुकी है। इस लेख में हम आपको बड़ी इलायची की खेती के बारे में जानकारी देंगे।

बड़ी इलायची की खेती के लिए जलवायु

बड़ी इलायची एक छायाप्रेमी पौधा है, जो स्वाभाविक रूप से उप-हिमालयी नम उपोष्णकटिबंधीय वनों में

पाया जाता है। Badi Elaichi Ki Kheti वाले क्षेत्रों में सालाना वर्षा 2000–3500 मिमी तक होती है, जो लगभग 200 दिनों में वितरित रहती है। ठंडे क्षेत्रों की निचली ऊँचाई और गर्म क्षेत्रों की ऊँची पहाड़ियाँ इलायची की फसल विकास के लिए उपयुक्त होती हैं। यहाँ औसत वार्षिक तापमान 6°C (दिसंबर–जनवरी) से 30°C (जून–जुलाई) तक होता है और वातावरण में नमी अधिक रहती है। फूल आने के समय लगातार वर्षा परागण करने वाले कीटों की सक्रियता को प्रभावित करती है, जिससे फलन और इलायची उत्पादन पर असर पड़ता है। सर्दियों में पौधे निष्क्रिय रहते हैं और 2°C तक सहन कर लेते हैं, लेकिन पाला और ओलावृष्टि इनके लिए हानिकारक होते हैं।

बड़ी इलायची की खेती के लिए मिट्टी

इलायची की फसल सामान्यत जंगल की दोमट मिट्टी में पनपती है, जिसकी गहराई कुछ सेंटीमीटर से कई इंच तक हो सकती है। मिट्टी का रंग भूरा–पीला से गहरा धूसर–भूरा तक पाया जाता है और इसकी बनावट रेतीली, बलुई दोमट, सिल्टी दोमट से लेकर चिकनी मिट्टी तक हो सकती है। बड़ी इलायची के लिए मिट्टी सामान्यत अम्लीय होती है (pH 5.0–5.5) और इसमें 1% से अधिक जैविक कार्बन होता है। ऐसी मिट्टियाँ नाइट्रोजन में समृद्ध, जबकि फॉस्फोरस व पोटैशियम में मध्यम स्तर की होती हैं। ढलानदार जमीन होने से जलभराव की संभावना कम रहती है, लेकिन उचित जल निकासी जरूरी है।

बड़ी इलायची की खेती में प्रमुख किस्में

- रैम्से – ऊँचाई >1515 मीटर के लिए उपयुक्त, मजबूत पौधे (1.5–2.0 मीटर), छोटे कैप्सूल (25–40 बीज), मई में फूल, फसल अक्टूबर–नवंबर।
- रामला – 1.5–2.0 मीटर ऊँचाई, गहरे गुलाबी कैप्सूल (30–40 बीज), मई में फूल, फसल अक्टूबर।
- सॉनी – मध्यम व उच्च ऊँचाई के लिए, चौड़ी पत्तियाँ, बड़े कैप्सूल (35–50 बीज), फूल मार्च–मई, फसल सितंबर–अक्टूबर।
- वारलांगेय – मध्य और ऊँचे क्षेत्रों के लिए, 1.5–2.5 मीटर ऊँचाई, बड़े कैप्सूल (50–70 बीज), फूल मई–जून/जुलाई।
- सेरेमना – मुख्यतः निचले क्षेत्रों में, टिलर हरे, झुकी पत्तियाँ, प्रति स्पाइक लगभग 10 कैप्सूल (65–70 बीज)।

इलायची की खेती का बिजनेस

यह फसल हल्की से मध्यम ढलान वाली, अच्छी जल निकासी वाली भूमि में बेहतर उगती है। पहले झाड़ियाँ और खरपतवार हटाए जाते हैं तथा पुराने पौधे निकाल दिए जाते हैं। गड्ढे **30×30×30** सेमी आकार के बनाते हैं और दूरी किस्म के अनुसार **1.45** से **1.8** मीटर तक रखी जाती है। गड्ढों को **15** दिन खुला छोड़ने के बाद ऊपर की मिट्टी में **1–2** किग्रा गोबर खाद मिलाकर भर दिया जाता है। मई के अंत तक गड्ढों की तैयारी पूरी कर लेना चाहिए ताकि मानसून से पहले रोपाई हो सके।

इलायची की फसल की रोपाई

इलायची की खेती में रोपाई जून–जुलाई में की जाती है, जब मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है। एक परिपक्व टिलर के साथ **2–3** कलियों वाली रोपण सामग्री लगाई जाती है। पौधों को कॉलर ज़ोन तक रोपते हैं और गहरे रोपण से बचते हैं। तेज हवा और बारिश से बचाव हेतु पौधों को सहारा दिया जाता है और नमी बनाए रखने के लिए मल्चिंग की जाती है।

बड़ी इलायची की खेती में रोपण सामग्री की तैयारी

इसका प्रसार बीज और सकर से किया जाता है। बीज से अधिक संख्या में पौध तैयार होते हैं और यदि नर्सरी सुरक्षित हो तो यह वायरस मुक्त रहते हैं। हालांकि, बीज से उपज हमेशा स्थिर नहीं रहती क्योंकि यह पर-परागण वाली फसल है। सकर द्वारा

रोपण करने पर मूल पौधे की विशेषताएँ बनी रहती हैं और यदि रोग-मुक्त, उच्च उत्पादक पौधों से लिया जाए तो उपज अधिक होती है।

इलायची उत्पादन में पोषक प्रबंधन

इलायची उत्पादन अधिक करने के लिए प्रति पौधा साल में दो बार (अप्रैल–मई व अगस्त–सितंबर) 5 किग्रा गोबर खाद/कम्पोस्ट डालना लाभकारी है। नर्सरी व बेड में वर्मी कम्पोस्ट विशेष रूप से उपयोगी है। बड़ी इलायची की रोपाई के समय 1 किलो माइक्रो भू पावर, 1 किलो माइक्रो फर्ट सिटी कम्पोस्ट, 1 किलो सुपर गोल्ड मैग्नीशियम, 1 किलो सुपर गोल्ड कैल्सी और 1 किलो माइक्रो नीम को मिलाकर एक संतुलित खाद मिश्रण तैयार करें। इस मिश्रण को पौध रोपाई के दौरान जुलाई में और खेत में खड़ी फसल पर नवम्बर में डालें।

इलायची की फसल में मल्चिंग व मिट्टी प्रबंधन

- गैर-सीढ़ीनुमा जमीन में ऊपर की मिट्टी को नीचे लाकर समतल किया जाता है।
- पौधों के आधार पर सूखी पत्तियाँ व जैविक अवशेष डालने से नमी संरक्षण और उर्वरता में वृद्धि होती है।

बड़ी इलायची की खेती में सिंचाई

- पौधे जल की कमी सहन नहीं कर पाते।
- पहले वर्ष खासतौर पर सितंबर–मार्च के शुष्क महीनों में हर 10 दिन पर सिंचाई करनी चाहिए।
- पाइप, स्प्रिंकलर या नालियों द्वारा सिंचाई की जाती है।
- वर्षा ऋतु में जल संचयन गड्ढे बनाना उपयोगी है।

इलायची की फसल में छाया प्रबंधन

- इलायची की फसल के लिए अधिक या कम छाया दोनों ही हानिकारक होती हैं। लगभग 50% छाया आदर्श है।
- छायादार वृक्षों की छंटाई जून–जुलाई में करनी चाहिए।
- अत्यधिक धूप से बचाव जरूरी है, वरना पत्तियाँ पीली पड़ सकती हैं।

इलायची खेती में खरपतवार नियंत्रण

- पहले 2–3 वर्षों में तीन बार निराई–गुड़ाई करना बेहतर होता है।
- इलायची की खेती में दरांती या हाथ से खरपतवार हटाते हैं।
- पौधों के बीच पूरी तरह सफाई जरूरी नहीं, लेकिन आधार के चारों ओर खरपतवार निकालकर सूखे अवशेष मल्च के रूप में डालना चाहिए।
- फूल आने के दौरान अवशेषों को पुष्पक्रम पर नहीं डालना चाहिए ताकि परागण बाधित न हो।

इलायची की खेती में उत्पादन और लाभ

बड़ी इलायची की खेती से किसान प्रति हेक्टेयर सालाना लगभग 2 से 3 लाख रुपये तक की आमदनी कर सकते हैं। बाजार में इसकी कीमत 900 से 1200 रुपये प्रति किलो तक रहती है। पौधा रोपण के बाद पहले और दूसरे वर्ष में बढ़वार और विकास करता है, जबकि तीसरे और चौथे वर्ष में एक हेक्टेयर क्षेत्र से 500 से 700 किलो तक उत्पादन प्राप्त होता है। मेरीखेती पर आपको ट्रैक्टर, उपकरण और अन्य कृषि मशीनरी से जुड़ी सभी नवीनतम जानकारी मिलती है। मेरीखेती ट्रैक्टर की कीमत, ट्रैक्टर तुलना, ट्रैक्टर से संबंधित फोटो, वीडियो, ब्लॉग और अपडेट की जानकारी और सहायता भी प्रदान करता है।

अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न

प्रश्न 1. बड़ी इलायची किस परिवार से संबंधित है?
उत्तर- बड़ी इलायची ज़िंगिबेरेसी (Zingiberaceae) परिवार की फसल है।

प्रश्न 2. इलायची के लिए किस प्रकार की मिट्टी उपयुक्त होती है?
उत्तर- अम्लीय (pH 5.0–5.5), जैविक कार्बन >1%, नाइट्रोजन से भरपूर, अच्छी जल निकासी वाली दोमट मिट्टी।

प्रश्न 3. इलायची की प्रमुख किस्में कौन-कौन सी हैं?
उत्तर- रैम्से, रामला, सॉनी, वारलांगेय और सेरेमना।

प्रश्न 4. इलायची की रोपाई कब की जाती है?
उत्तर- जून–जुलाई में, जब मिट्टी में पर्याप्त नमी होती है।

प्रश्न 5. इलायची के प्रसार के कौन-कौन से तरीके हैं?
उत्तर- बीज और सकर (सकर विधि अधिक लाभकारी)।

प्रश्न 6. पौधों को कितना खाद देना चाहिए?
उत्तर- प्रति पौधा साल में दो बार 5 किग्रा गोबर खाद/कम्पोस्ट देना चाहिए।

प्रश्न 7. इलायची की खेती में छाया प्रबंधन क्यों आवश्यक है?
उत्तर- लगभग 50% छाया आदर्श है। अधिक या कम छाया दोनों हानिकारक हैं।

प्रश्न 8. प्रति हेक्टेयर इलायची से कितनी आमदनी हो सकती है?
उत्तर- सालाना 2–3 लाख रुपये।

प्रश्न 9. एक हेक्टेयर में कितनी उपज मिलती है और कब से?
उत्तर- तीसरे–चौथे वर्ष से 500–700 किलो प्रति हेक्टेयर।

प्रश्न 10. इलायची की बाजार कीमत कितनी रहती है?
उत्तर- 900 से 1200 रुपये प्रति किलो।

किसानो की बात
मेरी खेती के साथ

www.merikheti.com

Contact No : +91 8800777501
Address : 5A-46, 6th Floor, Cloud 9 Tower, Vaishali,
Sector -1, Ghaziabad - 201010